Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 25 अंक 9 30 सितम्बर, 2025 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

सम्मान दिवस ताऊ देवी लाल बनाम किसान कल्याण

(25 सितम्बर जन्म दिवस पर विशेष)

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

25 सितंबर 1914 – 06 अप्रैल 2001

लेखक राष्ट्र के पूर्व उपप्रधान मंत्री जननायक स्व० चौ० देवी लाल को उनकी 112 वीं जयन्ती पर समस्त किसान–काश्तकार–कामगार एवं दलित वर्ग की ओर से तहदिल से बार–बार हार्दिक अभिनन्दन करता है। जननायक चौ० देवी लाल एक मात्र जमीनी स्तर से जुड़े राजनैतिक व्यक्तित्व रहें जिन्होंने आजादी से पूर्व व बाद में सदैव किसान–काश्तकार, दलितों व मध्यम वर्ग के कारोबारियों के उत्थान व कल्याण के लिये संघर्ष किया और इन वर्गों के हितों के लिये समस्त राष्ट्र में विभिन्न सामाजिक व कल्याणकारी योजनायें लागू की। समाज कल्याण का जज्बा उनमें बचपन से ही रहा है, इसलिये मात्र 16 वर्ष की आयु में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आहवान पर अपनी शिक्षा बीच में छोड़कर अंग्रेजों भारत छोड़ों आंदोलन में कूद पड़े।

उनका समस्त जीवन किसानी व जनसाधारण को समर्पित रहा है। अतः आजादी के बाद अपनी हजारों एकड़ भूमि मुजारों, भमिहीनों व खेतीहर मजदूरों के जीवनयापन हेतू दान कर दी। उनका राजनैतिक सफर भी एक अलग मिसाल के तौर से जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने कभी भी नीजि स्वार्थ की व्यक्तिगत राजनीति को तव्वजों नहीं दी। उनका मानना था कि **"लोक राज लोकराज"** से चलता है और प्रजातंत्र में जनता की अदालत ही सर्वोपरि है और जनता जर्नाधन की आवाज का सम्मान ही प्रजातंत्र की असली पहचान है, इसलिये पुलिस व सिविल प्रशासन को जनता दरबार लगाकर आम जन के प्रति जवाबदेही बनाया।

उनकी राजनैतिक सोच आरम्भ से ही ग्रामीण समाज कल्याण विशेषकर अन्नदाता, लघु ग्रामीण उद्योग व दलित कल्याण पर केन्द्रित रही और सता में होते हुये भी सार्वजनिक तौर से आहवान करते थे कि राष्ट्र के विकास के लिये किसान का बेटा प्रधानमंत्री तथा हरिजन का बेटा राष्ट्रपति होना चाहियें, क्योंकि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह उनका यह घोर मत रहा है कि ग्रामीण समाज के विकास के बिना राष्ट्र सम्पन्न नहीं हो सकता। किसान हित उनके लिये सर्वोपरि रहा, इसलिये उन्होंने कभी भी जातिगत आरक्षण की मांग नहीं की बल्कि समस्त कृषि वर्ग –अजगर यानि अहीर, जाट, गुज्जर, राजपूत सहित समस्त कृषि से जुड़ी जातियों के लिये कृषि आरक्षण की आवाज उठाई थी। उनका मानना था कि आरक्षण केवल एक विशेष जाति नहीं बल्कि खेती–बाड़ी से जुड़े सभी वर्गो का मौलिक अधिकार है।

उनका मानना था कि किसान को अपने मौलिक अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने व उनमें राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने हेतू किसान, कामगार व कास्तकार वर्ग को राजनैतिक सत्ता में प्रतिनिधित्व/भागीदारी दिया जाना जरूरी है इसलिए उन्होंने कमेरा वर्ग के गरीब व मध्यमवर्गीय व्यक्ति को भी राजनीति व सत्ता में स्थान दिलवाया।

चौ० देवीलाल स्वच्छ, पारदर्शी एवं बेदाग प्रशासन के पक्षधर रहे, अतः अपने शासनकाल में उन्होने 'भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध' जैसे अनुकरणीय सिद्धांत कायम किए, जिनकी आज मांग उठने लगी है कि नेता, प्रशासन व राजनीति तंत्र सबको जनता के अधीन करना होगा ताकि चौधरी देवीलाल के जन कल्याणकारी शासन को शास्वत किया जा सके। मुख्यमंत्री होते हुए भी जनता के बीच चले जाते व बुजुर्गों व आम आदमी से खुलकर बातचीत करते थे। उनकी सोच थी कि जन सहयोगी व जनता की सरकार ही ग्रामीण समाज का कल्याण कर सकती है। इसलिए आमजन की समस्याओं के निवारण के लिए जनता दरबार, प्रशासन आपके द्वार आदि कार्यक्रमों द्वारा प्रशासन व पुलिस की जबाबदेही सुनिश्चित की।

अपने शासनकाल में जनता के लिए बुढ़ापा पैंशन, विकलांग पैंशन, विधवा पैंशन, बेरोजगार पैंशन, जच्चा–बच्चा योजना, गांव–गांव हरीजन चौपाल आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की जिनका आज पुरे राष्ट्र में अनुसरण किया जा रहा है। महिला शिक्षा के विकास के लिए पंचायतों को तीन गुणा मैचिंग ग्रांट देने का प्राक्धान किया। खेलों को बढ़ावा देने तथा युवाओं के लिये रोजगार सुनिश्चित करने हेतु सरकारी नौकरी व पुलिस बल में 3 प्रतिशत खेल कोटे के साथ–साथ युवाओं के लिये नौकरी हेतु साक्षात्कार व परीक्षा देने जाने के लिये रोडवेज की बसों में मुफ्त सफर का प्रावधान किया। कांग्रेस पार्टी ने 1986 में श्री भजनलाल को मुख्यमंत्री से अपदस्थ किया और श्री बन्सीलाल जी को मुख्यमंत्री बनवाया, लेकिन चौ० देवी लाल ने अपनी

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

जनप्रिय व न्यायवादी छवि के कारण वर्ष 1987 में विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटें जीतकर एकछत्र नेता के तौर पर एक नई मिशाल कायम की जिसकी बराबरी होना शायद असंभव है। इस अनुठी राजनैतिक विचारधारा की बदौलत वर्ष 1977 में जनविरोधी कांग्रेस का सफाया कर दिया जो कि वर्तमान राजनीतिज्ञों के लिए एक ऐतिहासिक अजुबे से कम नहीं है।

चौधरी साहब ने किसान–मजदूर के हितों के लिए प्रधानमंत्री की पेशकश को ठुकरा कर स्वर्गीय श्री वी.पी. सिंह व बाद में स्वर्गीय श्री चंद्रशेखर तथा स्वर्गीय देवेगोड़ा को प्रधानमंत्री बनवाकर निस्वार्थ व त्याग की एक ऐतिहासिक मिशाल पेश की और किंगमेकर बन गए। सोनीपत में अपने अतिंम भाषण में उन्होने कहा था कि हम राजनीति में देश की रक्षा व विकास के लिए आते हैं ना कि सत्ता सुख भोगने के लिए। चौ० देवीलाल ने अपने शासनकाल में जनता द्वारा चुने हुये जनप्रतिनिधियों को जनता–जनार्धन के हितों व कल्याण के प्रति खरा न उतरने पर उनको वापिस बुलाने तक की मांग उठाई थी।

हरियाणा प्रदेश के गठन के लिए उनका सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों के समक्ष उन्होंने हरियाणा वासियों के हक के लिए जबरदस्त पैरवी की और उनके आंदोलन के आगे केंद्र सरकार को झुकना पड़ा और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी को उनकी अलग हिंदी भाषी क्षेत्र की मांग को मानना पड़ा।

किसान काश्तकार के हितों के लिये तुरंत निर्णय लेना उनकी विशेष पहचान थी। कांग्रेस की किसान विरोधी व तानाशाही नीतियों के विरोध में कांग्रेस पार्टी छोड़ दी और गांव–गांव जाकर किसानों, दलितों और मजदूरों की रक्षा के लिए संघर्ष समिति गठित की। सन 1975 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने देश में आपातकालीन स्थिति लागू कर दी तो उसका डटकर विरोध किया और 19 माह बाद जेल से रिहा होकर समस्त विपक्ष को इकट्ठा करके व राष्ट्रभर में कांग्रेस की जन विरोधी कारगुजारियों से जनता को आगाह करके सर्वदलीय जनता पार्टी के गठन में अहम भूमिका निभाई तथा कांग्रेस का सफाया हुआ। आमजन के प्रति उनके संघर्ष व लगाव के कारण पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ताऊ को जनता का प्रतीक कहा। उन्होंने हरियाणा में ग्रामीण उद्योग योजना लागू की, जिससे कृषि का भी विस्तार हुआ लेकिन अगली सरकारों ने इस योजना को बंद कर दिया। इसके साथ ही ग्रामीण जनता के लिए रोजगार सुनिश्चित करने हेतू एक परिवार एक रोजगार आयोग गठित किया था जिसको सन् 1991 में बंद कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हरियाणा प्रांत बेरोजगारी में 37.3 के स्कोर पर पहुंच चुका है जोकि राष्ट्र की बेरोजगारी 8.8 की दर से सबसे उच्च स्तर पर है।

उन्हें हिंदी भाषा के साथ–साथ उर्दू भाषा से दिल से लगाव था। चौधरी देवीलाल ने सदैव किसान–मजदूर के दर्द को महसूस किया और जीवन प्रयंत कमेरा व लुटेरा वर्ग के बीच की खाई को पाटने में लगे रहे। किसान की फसल की बर्बादी को देखकर मुख्यमंत्री होते हुए सरकारी अमले को छोडकर खेत की मेढ पर बैठकर अत्यंत मायुस हो जाते और बाढ़ के दिनों में गांव में जाकर रिंग बांध बनाने हेतू स्वंय सिर पर मिट्टी का टोकरा उठा लेते।

वे मानते थे किसान सर्वाधिक मेहनती, भोला, ईमानदार व देशभक्त समुदाय है। चौधरी साहब ने सत्ता में आते ही प्रा. तिक आपदाओं से होने वाले नुकसान पर किसान को सरकारी कोष से मुआवजा दिलवाने का प्रावधान किया और वर्ष 1978 में ओलावृष्टि का 400 रूपये प्रति एकड़ मुआवजा दिलवाया। बाद में किसान के खेत के साथ खड़े वृक्षों में से किसान को आधी कीमत दिलवाई, किसानों, काश्तकारों, मजदूरों व श्रमिकों के 10 हजार तक के ऋण माफ किए और किसान–कामगार के लिए किसान मंडी, अपनी मंडी, मैचिंग ग्रांट, काम के बदले अनाज आदि लाभकारी योजनाएं शुरू की जो कि बाद में आने वाली सरकारों ने धीरे–धीरे बंद कर दी, जिस कारण किसान मजदूर आज फिर सरकारी उपेक्षा के कारण दयनीय हालत से गुजर रहा है। आज अन्नदाता खेत में आत्महत्या करने पर मजबूर है।

आज आवश्यकता है कि ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुसरण किया जाए। इससे सरकारी नीति व

दूसरों को प्रभावित करने की सोच, खुद को उनका गुलाम बनाने की शुरुआत है।

कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब–मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ–साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब–मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें।

आज हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मु कश्मीर आदि राज्यों का पूरा किसान–कामगार–काश्तकार समाज बर्बादी के कगार पर है। अधाधुंद वर्षा के कारण इन राज्यों में 400 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी। अकेले पंजाब में लगभग 1400 गांव बिलकुल बर्बाद हो गये, न सिर पर छत बची है और अन्न–पानी तक के लिये तरस रहे है। 9000 करोड़ की लगभग 3 लाख एकड़ फसल नष्ट हो गई और पशुधन का भारी संख्या में मारे जाने अथवा गुम होने का कोई अनुमान नहीं। हरियाणा के 12 जिलो में 1405 गांव बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित है। 6 लाख एकड़ की फसले नष्ट हो चुकी है और 120 व्यक्तियों की जनहानि के अलावा भारी संख्या में पशुधन का नुकसान हुआ है। जम्मु कश्मीर में 90 हजार हैक्टेयर में धान की फसल बर्बाद हो गई और उतराखण्ड़ में भारी मात्रा में सेब की फसल की बर्बादी के इलावा लाखों लोगों के आवास धवस्त हो गये। इन राज्यों में अब तक लाखों करोड़ का नुकसान बाढ़ व प्राकृतिक आपदा के कारण हो गया लेकिन सरकार की ओर से अनुदान व सहायता राशि अभी तक लगभग शून्य के बराबर है। अतः 112वीं जन्म शताब्दी पर जननायक धरतीपुत्र धरती में समाया हुआ आवाज दे रहा है कि जनता के सभी चुने हुये जनप्रतिनिधि चैन की नींद सो रहे है, इसलिये जनता जनार्धन को उन्हें वापिस बुलाने का अधिकार दिया जायें ताकि किसान–कामगार–काश्तकार व जनसाधारण की आवाज पुनः बुलंद हो सकें।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तक चौधरी साहब के गुप्तचार विभाग के अधिकारी तथा प्रमुख (गुप्तचार विभाग) रहे हैं।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

गऊ रक्षक हरफूल सिंह जाट जुलानी वाले

– श्रीमती कृष्णा मलिक, चेयरपर्सन
चौधरी भरत सिंह मेमोरियल स्पोर्टस शिक्षण संस्थान,
निड़ानी, जीन्द

वीर हरफूलसिंह का जन्म 1892 ई० में भिवानी जिले के लोहारू तहसील के गांव बारवास में एक जाट क्षत्रिय परिवार में हुआ था। उनके पिता एक किसान थे।

बारवास गांव के इन्द्रायण पाने में उनके पिता चौधरी चतरू राम सिंह रहते थे। उनके दादा का नाम चौधरी किताराम सिंह था। 1899 में हरफूल के पिताजी की प्लेग के कारण मृत्यु हो गयी। इसी बीच ऊनका परिवार जुलानी (जींद) गांव में आ गया। यहीं के नाम से उन्हें वीर हरफूल जाट जुलानी वाला कहा जाता है।

हरफूल की माता जी को उनके देवर रत्ना का लत्ता उढा दिया गया। लत्ता उढाने का मतलब देवर की पत्नी बनना। हरफूल अपने मामा के यहां तोशाम के पास संडवा (भिवानी) गांव में चले गये। जब वे वापिस आये तो उनके चाचा के लड़कों ने उसे प्रोपर्टी में शेयर देने से मना कर दिया। जिस पर बहुत झगड़ा हुआ। और हरफूल को झूठी गवाही देकर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। और हरफूल पर थानेदार ने बहुत अत्याचार किये।

उनकी माता ने हरफूल का पक्ष लिया मगर उनकी एक न चली बाद में उनकी देखभाल भी बन्द हो गयी। उसके बाद हरफूल सेना में भर्ती हो गए। उन्होंने 10 साल सेना में काम किया। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में भी भाग लिया। उस दौरान ब्रिटिश आर्मी के किसी अफसर के बच्चों व औरत को घेर लिया। तब हरफूल ने बड़ी वीरता दिखलाई व बच्चों की रक्षा की। अकेले ही दुश्मनों को मार भगाया।

पारिवारिक कलह के ज्यादा बढ़ने के कारण फिर हरफूल ने सेना छोड़ दी। जब सेना छोड़ी तो उस अफसर ने

उन्हें गिफ्ट मांगने को कहा गया तो उन्होंने फोल्डिंग गन मांगी। फिर वह बंदूक अफसर ने उन्हें दी।

थानेदार व अपने परिवार से बदला–

उसके बाद हरफूल ने सबसे पहले आते ही टोहाना के उस थानेदार को ठोक दिया जिसने उसे झूठा पकड़ा व टॉर्चर किया था। फिर उसने अपने परिवार से जमीन में हिस्सा मांगा तो चौधरी कुरड़ाराम जी के अलावा किसी ने सपोर्ट न किया और भला बुरा कहा। वे उनकी माता की मृत्यु के भी जिम्मेदार थे तो बाकियो को हरफूल ने ठोक दिया। फिर हरफूल बागी हो गया उसने अपना बाद का जीवन गौरक्षा व गरीबों की सहायता में बिताया।

गौरक्षा– पहला हत्था तोड़ने का किस्सा– 23 जुलाई 1930

टोहाना में मुस्लिम रॉधड़ का एक गाय काटने का एक कसाईखाना था। वहां की 52 गांवों की नैन खाप ने इसका कई बार विरोध किया। कई बार हमला भी किया जिसमें नैन खाप के कई नौजवान शहीद हुए व कुछ कसाई भी मारे गए। लेकिन सफलता हासिल नहीं हुई। क्योंकि ब्रिटिश सरकार मुस्लिमों के साथ थी। और खाप के पास हथियार भी नहीं थे।

तब नैन खाप ने वीर हरफूल को बुलाया व अपनी समस्या सुनाई। हिन्दू वीर हरफूल भी गौहत्या की बात सुनकर लाल पीले हो गए और फिर नैन खाप के लिए हथियारों का प्रबंध किया। हरफूल ने युक्ति बनाकर दिमाग से काम लिया। उन्होंने एक औरत का रूप धरकर कसाईखाने के मुस्लिम सैनिको और कसाइयों का ध्यान बॉट दिया। फिर नौजवान अंदर घुस गए उसके बाद हरफूल ने ऐसी तबाही मचाई के बड़े बड़े कसाई उनके नाम से ही कांपने लगे। उन्होंने कसाईयों पर कोई रहम नहीं खाया। सैकड़ों मुस्लिम रॉघड़ों को मौत के घाट उतार दिया। और गऊओ को मुक्त करवाया। अंग्रेजों के समय बूचड़खाने तोड़ने की यह प्रथम घटना थी।

इस प्रकार हरफूल सिंह सभी हिंदू समाज के लिए एक वीर योद्धा के रूप में उभरकर सामने आए। इस महान साहसिक कार्य के लिए नैन खाप ने उन्हें सवा शेर की उपाधि दी व पगड़ी भेंट की।

विश्व गौरक्षक दिवस 27 जुलाई

उसके बाद तो हरफूल ने ऐसी कोई जगह नहीं छोड़ी जहां उन्हें पता चला कि कसाईखाना है वहीं जाकर धावा बोल देते थे। उन्होंने जींद, नरवाना, गोहाना, रोहतक आदि में 17 गौहत्थे तोड़े, उनका नाम पूरे उत्तर भारत में फैल गया। कसाई उनके नाम से ही थर्राने लगे। उनके आने की खबर सुनकर ही कसाई कारखाने छोड़कर भाग जाते थे। हमारे बड़े बुजुर्ग बताते हैं कि हरफूल सिंह जाट ने अकेले ही कम से कम सैकड़ों कत्लखाने तोड़े होंगे, उनका कोई गैंग कोई टीम नहीं थी वह अकेला ही 30–35 आदमीयों पर भारी पड़ता था उनका निशाना अचूक था। अंग्रेज अफसर से मिली विशेष बंदूक हरफूल को बहुत प्यारी थी। वह बंदूक उनके पास आखिरी समय तक रही।

इस प्रकार हरफूल सिंह जाट जुलानी वाले के कारण मुसलमान और अंग्रेजों का कसाईवाड़े का धंधा चौपट हो गया। इसलिए अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लग गई। मगर हरफूल कभी हाथ न आये। कोई भी अग्रेजों को उनका पता बताने को तैयार नहीं हुआ।

गरीबों के मसीहा थे...

वीर हरफूल सिंह उस समय चलती फिरती कोर्ट के नाम से भी मशहूर थे। जहाँ भी गरीब या औरत के साथ अन्याय होता था वे वहीं उसे न्याय दिलाने पहुंच जाते थे। उनके न्याय के भी बहुत से किस्से प्रचलित हैं।

हरफूल की गिरफ्तारी व बलिदान

अंग्रेजों ने हरफूल के ऊपर इनाम रख दिया और उन्हें पकड़ने की कवायद शुरू कर दी। इसलिए हरफूल अपनी एक ब्राह्मण धर्म बहन के पास झुंझनु (रजस्थान) के पंचेरी कलां पहुंच गए। इस ब्राह्मण बहन की शादी भी हरफूल ने ही करवाई थी।

यहां का एक ठाकुर भी उनका दोस्त था। वह ईनाम के लालच में आ गया और उसने अंग्रेजों के हाथों अपना जमीर बेचकर दोस्त व धर्म से गद्दारी की। अंग्रेजों ने हरफूल को सोते हुए गिरफ्तार कर लिया। कुछ दिन जींद जेल में रखा लेकिन उन्हें छुड़वाने के लिये हिन्दुओ ने जेल में सुरंग बनाकर सेंध लगाने की कोशिश की और विद्रोह कर दिया। इसलिये अंग्रेजों ने उन्हें फिरोजपुर जेल में चुपके से ट्रांसफर कर दिया।

बाद में 27 जुलाई 1936 को चुपके से पंजाब की फिरोजपुर जेल में अंग्रेजों ने उन्हें रात को फांसी दे दी। उन्होंने विद्रोह के डर से इस बात को लोगो के सामने स्पष्ट नहीं किया व उनके पार्थिव शरीर को भी हिन्दुओ को नहीं दिया गया। उनके शरीर को सतलुज नदी में बहा दिया गया।

इस तरह देश के सबसे बड़े गौरक्षक, गरीबो के मसीहा, उत्तर भारत के रॉबिनहुड कहे जाने वाले वीर हरफूल सिंह ने अपना सर्वस्व गौमाता की सेवा में कुर्बान कर दिया।

मगर कितने शर्म की बात है कि बहुत कम लोग आज उनके बारे में जानते हैं। कोई गौरक्षक संगठन भी उनको याद नहीं करते। गौशालाओं में भी गौमाता के इस लाल की मूर्तियां

भी नहीं है। सर्व समाज से मैं निवेदन करता हूं कि सभी मिलकर हर गौशाला में गऊ रक्षक हरफूल सिंह महान व्यक्ति की जयंती मनाएं और स्मारक बनाने का कार्य आरंभ करें। ताकि भविष्य में याद ताजा रहे और आने वाली पीढ़ी अपने पूर्वजों पर गर्व महसूस कर सकें और गौ माता के प्रति प्यार बना रहे।।

जय हिंद जय भारत

जाट आर्य हैं

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

जट्ट शब्द समूह के लिए प्रयोग होता हैं। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है कि जिसमें बिखरी हुई ताकतें इक्कट्टी हो जायें। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है जाट। इन दोनों का अर्थ एक ही है। यह जाट संघ आर्य राजवंशों व क्षत्रियों के संगठन से बने हैं जो कि आर्य थे। इसके कुछ उदाहरण उन जाट गोत्रों के दिए गए हैं जो कि चन्द्रवंशी आर्य चक्रवर्ती सम्राट ययाति के वंशज हैं और कुछ सूर्यवंशी (ययातिवंशी) है। जाट केवल एक हिन्दू जाति ही नहीं, वास्तव में एक नस्ल है। जातियों की पहचान के लिए अंग्रेज विशेषज्ञों ने कई साधन निकाले जैसे शारीरिक बनावट और भाषा आदि। शरीर शास्त्र के अनुसार विशेषज्ञों ने मनुष्य जाति को पांच भागों में बांटा है जैसे :– 1. आर्य 2. मंगोलियन 3. हब्शी 4 मलय (मलायापन) 5. अमेरिकन रंग के हिसाब से गौरे, काले, बादामी, लाल, पीली, काली आंखें, लम्बी बांहें व ऊंचे कद काठ के होते हैं। "हिस्ट्री ऑफ आर्यन रूल इन इन्डिया" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मानव तत्वविज्ञान की खोज से सिद्ध हुआ है कि भारतीय आर्य जाति, जिसको आर्यन साहित्य में लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाओं शेर की तरह पतली कमर, लम्बी टांगों वाली जाति बतलाया है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, कश्मीर आदि प्रदेशों में यह नस्ल पाई जाति है। लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, गोरा रंग या गेहूंआ रंग, काले बाल, ऊंची गर्दन काली आंखें, पतली व लम्बी नाक आदि से भली भांति पहचाने जा सकते हैं क्योंकि जाट व आर्यन युवक का शरीर काफी फुर्तिला और गठीला होता है। इस तरह के लक्षणों को देखकर ही मि. नेसफिल्ड ने बलशाली शब्दों में कहा कि रंग रूप यदि कुछ समझे जाने वाली बात हैं तो जाट आर्यो के इलावा और कुछ नहीं हो सकते। वास्तविकता भी यही हैं कि वैदिक आर्यों के वंशज जाटों के लक्षण आज के जाटों में भी पाए जाते हैं।

सन् 1901 ई० की जनगणना की रिपोर्ट पेज 500 पर सर एच.रिजले साहब ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि जाट शारीरिक बनावट के आधार पर आर्य हैं। कुछ देसी तथा विदेशी इतिहासकारों ने शारीरिक गठन, स्वभाव, रहन–सहन, आचार–विचार, रिती–रिवाज, परम्पराऐं, प्रशासनिक प्रबन्ध राजनैतिक विकास पर विचार आदि उसके इलावा साहसिक प्रवृति और भूमि उत्पादन अनुसन्धान को अपना बिन्दु मानकर भारतीय जाटों को यूरोप के प्राचीन आर्य, गेटी, मैसेगटाई (महानजाट) यूचि, यति, जतिका आदि जातियों के साथ संबंध बताया है। भारतीय सीमाओं का भौगोलिक अंग होने के बाद भी भारतीय आर्य जाति के जाटों के शकद्वीप (सिन्धू प्रदेश) में जाकर बसने के कारण ही विदेशी शक, भारतीय शक अथवा इन्डोसिथियन प्रभावित करने का प्रयास किया है। भारतीय सीमान्त प्रदेश कन्धार, गजनी और यदु की पहाड़ियों को निकास का केन्द्र बिन्दू माना है। लेकिन जाट आर्य पुत्र भारत की ही सन्तान है। ब्रजमंडल और दोनों मालवा के मूल निवासी है। सम्पूर्ण जाट अपने आपको एक स्तर से यदूवंशी (चन्द्रवंशी) संतान मानते हैं जब कि इनमें सूर्यवंशी और नागवंशी शाखाओं के जाट कुटुम्ब कबिलों को भी अगर मिला लिया जाए तो हमें गहन अध्ययन से पता चलेगा कि मध्य एशिया, अरब और यूरोप में पाये जाने वाले आर्यन जाट भारतवर्ष से ही पलायन करके गए हैं क्योंकि सिन्धू घाटी की सभ्यता ही सबसे पुरानी वैदिक सभ्यताएं हैं मैसोपोटामिया और मिश्र की सभ्यता तो सिन्धू घाटी की सभ्यता से हजारो वर्ष बाद पनपी हैं।

कर्नल जैम्स टॉड का मत है कि जाट इन्डोसिथियन कुल के हैं जो कि ईसा से एक सौ वर्ष पूर्व अपने निवास स्थान ऑक्सस घाटी से पंजाब में चले गए थे। कनिघम, इब्बेटसन और विसेन्ट, स्मिथ ने इनका समर्थन किया है। जैक्सन और कैम्पबैल ने इनका संबंध कुषाण और यूचि से बताया है। डॉ० ट्रम्प और बीम्स ने शारीरिक तथा भाषा दोनों दृष्टि से जाटों को शुद्ध इन्डो आर्यन वंशज होने का दावा किया है। मिलर ने भी इनका ही समर्थन किया है। इसलिए बीम्स ने पृष्ट 128 पर कहा है कि जाट शूरसेन की पुरानी सीमाओं को छोड़कर कभी बाहर नहीं गए।

कानूनगो के अनुसार शारीरिक विशेषताओं, भाषा, चरित्र आदि से जाट वैदिक आर्यों के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि हैं। इतिहास में जाट काफी निर्भिक लड़ाकू के रूप में जाने जाते हैं। ये मुख्यतया कृषक हैं। यही कारण है कि इस जाति ने सिन्ध, पंजाब, मध्यप्रदेश की मालवा, राजस्थान, गंगा का दोआब के पश्चिमी हिस्सों में काफी निर्माण कार्य किया। डॉ० इरविन के

संयोग से जीवन मिलता है और सहयोग से चलता है, कुछ हँसकर बोल दें कुछ हँसकर टाल दें,
परेशानियां तो बहुत है जीवन में कुछ वक्त पर डाल दें।

अनुसार 'जाट' अपने गांव की सरकार में राजपूतों की बजाय अधिक प्रजातांत्रिक होते हैं। वंशानुगत अधिकार के प्रति उनका लगाव कम होकर लोगों द्वारा चूने हुए मुखिया को प्राथमिकता देते हैं। जो कि आर्यो की रिती के अनुसार है मजबूत सामाजिक बन्धन तथा प्रशासन के प्रजातान्त्रिक विचारों की अटूट परम्परा के साथ–साथ अपने भाई की विधवा के साथ शादी का रिवाज और नियोग की मान्यता जाटों की कुछ ऐसी सामाजिक विशेषताएं है जो उन्हें हिन्दुओं के किसी उच्च जाति की अपेक्षा वैदिक आर्य होने के सच्चे प्रतिनिधि होने के दावो को सिद्ध करती है।

कर्नल टॉड ने सकन्दनाभ में जाटों की बस्तीयों का वर्णन किया है। किन्तु जिस समय सकन्दनाभ बस्तीयों का वर्णन किया है, उससे कई शताब्दी पहले भारत में जाटों का अस्तित्व पाया जाता है। जाट भारत से ही अरब, यूरोप, मध्य एशिया व पूर्वी एशिया सभी जगह भारत से ही गए है।

श्री चिन्तमणि विनायक वैघ मानते हैं कि किसी भी विदेशी इतिहास में ऐसा कहीं नहीं लिखा कि जाट किस देश से भारत में आए।

पं. इन्द्र, वेदावाचस्पति "मुगल साम्राज्य का उदय और कारण" नामक इतिहास पुस्तक में यही बात लिखते हैं कि "जब से जाटों का वर्णन मिलता है वह भारतीय ही हैं और यदि जाटों के भारत से बाहर कहीं भी निशान मिलते है तो वह भी भारत से ही गए हुए है।" (जाट इति. पृ. 65–66 डॉ. देशराज)

जाट हुणों के संबंन्धी नहीं बल्कि शत्रु थे जाटों ने हुणों का सामना किया और उनको परास्त किया। अतः जाट पंजाब के ही निवासी थे। मंदसौर के शिलालेख वाला यशोधर्मन, जिसने हुणो को लगातार परास्त किया था वह विर्क गोत्र का जाट था। जाट मालवा में भी उस समय से पहले ही सिन्ध की ही तरह पहुंच चुके थे। जाट हमेशा हुणों के विरोधी रहे हैं और जाट भारत में सबसे शुद्ध आर्य है तथा आर्यो का बाहर से आकर भारत में बसने के कोई भी प्रमाण नहीं मिलते। जाटों का भारत में आने का न तो कोई विदेशी इतिहासकारो का कथन है और न ही जाटों की अपनी ही कोई दन्त कथा है। इसके इलावा न ही कोई ऐतिहासिक व शिलालेख के प्रमाण हैं। जो कुछ थोड़ा बहुत युरोपियन इतिहासकार जाटों को सिथियन और विदेशी साबित करने की असफल कोशिश करते हैं में उनका ये केवल भ्रम मात्र ही मानता हूँ। जाट न हुणो, शको व न सिंथियनों की औलाद हैं, बल्कि वे विशुद्ध आर्य हैं। सिंथिया में भी जाट भारत से ही गए थे।

जाट ने तो सिंथियन हैं, न जथरा हैं और न ही मध्य एशिया के जथरा की पहाड़ियों से आए हैं किन्तु जाट तो सच्चे भारत माता के पुत्र हैं जिन्होंने पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, यु.पी. व मध्य प्रदेश का मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र आदि को अपने पुरूखों का ही घर बतलाया हैं। जाटों से इस बात का स्वीकार करवाना कि वे पुराने यदुवंशीयों की संतान नहीं हैं बहुत मुश्किल हैं।

अब मानवतल अनुसंधान शास्त्र के अनुसार जाटों के आर्य होने के कुछ प्रमाण निम्न प्रकार से दिए जाते है। मानवतत्व विज्ञान में की गई एक खोज के अनुसार भारतीय आर्य जाट जाति के बारे में कहा गया है कि हिन्दु वैदिक ग्रन्थों में लम्बे कद–काठ सून्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाएं शेर की सी कमर, हिरण जैसे पतली टांगों वाली, गोरे व गेहूं रंग की जाति बतलाया हैं जैसे कि यह प्राचीन समय में थी। आधुनिक भारत पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, यू.पी. और कश्मीर में जाट, और राजपूतो को क्षत्रिय जातियों के नाम से पुकारा जाता है। इसके अलावा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान व अरब में 630 ई0 से पहले सभी जाट थे जिन्होंने 630 ई0 के बाद इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था। प्राचीन आर्य जाति भारत की ही निवासी थी। इन्होंने ही विदेशों में जैसे अरब युरोप, मध्य एशिया व पूर्व एशिया में जाकर राज्य स्थापित किए और उन्हीं में से कुछ दोबारा भारत में आकर बस गए क्योंकि इनकी शारीरिक बनावट आपस में मेल खाती है।

भाषा विज्ञान के अनुसार जातियों को पहचानने का जो तरीका हैं उसके अनुसार जाट आर्य है। इसके प्रमाण मि. सर. हैनरी, एम. इलियट के सी.बी. "डिस्ट्रब्यूसन ऑफ दी रेसेज ऑफ दी नोर्थ वैसटर्न प्राविंशेज ऑफ इण्डिया" में लिखते हैं कि बहुत समय हुआ कि मैंने कराची से पेशावर तक यात्रा करके अनुभव किया कि जाट लोग कुछ खास परिस्थितियों के इलावा अन्य शेष जातियों से अधिक अलग नहीं हैं। भाषा से जो कारण बताया गया है वह जाटों और आर्यों की भाषा एक ही है क्योंकि जाट विशुद्ध रूप से आर्य ही हैं क्योंकि आर्य जाटों के इलावा बहुत कम संख्या में हैं। यदि सिथियन होते तो उनकी सिथियन भाषा कहा चली गई। ऐसे कैसे हो सकता है कि वे अब आर्य भाषा को जो कि हिन्दी की ही एक शाखा है, उसको बोलते हैं, जिसे खड़ी भाषा यानि हरियाणवी भी कहते हैं। ये हरियाणा के जाटों यानि हरियाणवी आर्यों की भाषा है। इसे वे सदियों से बोलते चले आए हैं। पेशावर से डेरा जाट और सुलेमान पर्वतमाला के पार कच्छ गोंडवाना में यह भाषा हिन्द की या जाट की भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। शारीरिक बनावट व भाषा ऐसी चीज हैं कि उनको दरकिनार नहीं किया जा सकता। (जाट इति. पृ. 62 देशराज)

शरीर की बनावट व भाषा इन दो पहचानों से सभी जातियों का पता चल जाता है इसके इलावा धार्मिक भावना व रिती रिवाजों से भी हर जाति का पता चल जाता है कि

जो भी खेत में बोते हो हर चीज अंकुरित नहीं होती, लेकिन जीवन में किए गए अच्छे कर्म का बीज हमेशा अंकुरित होता है।

यह किस नस्ल व देश की है। इस सिद्धान्त के अनुसार जाट आर्य नस्ल से ही संबंधित है। अतः धार्मिक भावनायें और रिती–रिवाज उन्हें वैदिक आर्यों का सच्चा उत्तराधिकारी सिद्ध करती है। यह निर्विवाद सही बात है कि "जाट विशुद्ध रूप से आर्य है"। जाट अपनी वीरता से सारे संसार में प्रसिद्ध रहे हैं क्योंकि प्रथम व द्वितीस विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने जाटों की वीरता को भली–भांति देखा व परखा था।

कारनामा राजपूत का लेखक श्री नजमुल रामपुरी लिखता है कि जाट जाति के अभ्यास, स्वभाव, रिति–रिवाज, रहन–सहन से पता चलता है कि वे सिन्ध नदी के पूर्व–पश्चिम में दोनों तरफ पाये जाते हैं। यदू/यादवों से ही उनका निकास सम्भव होता है। जाट जाति को कृष्णवंशी होने का गौरव प्राप्त है। इसी तरह सुख संपत्ति राय जी भंडारी ने अपने "भारत के देशी राज्य" नामक महाग्रन्थ में लिखा है कि "जाट आर्य वंश के है और प्राचीन काल में भारत में उनके निवासी होने के एतिहासिक प्रमाणिक उल्लेख भी मिलते हैं। यह भी पता चलता है कि जाट क्षत्रिय और उच्चकुलीन माने जाते थे क्योंकि जाट क्षत्रिय थे और क्षत्रियों को समाज में उच्च कुलीन माना जाता है और जाट आज भी उच्च कुलीन ही है क्योंकि जाटों को समाज में आज भी अन्नदाता कहा जाता है और अन्नदाता का समाज में 'प्राचीन वैदिक काल से ऊंचा दर्जा रहा है।'

आर्य लोग सामाजिक मामलों में अधिक उदार (श्रेष्ट) होने के कारण गत शताब्दीयों में पौराणिक मनोवादियों की आंखों में खटकने लगे और जाटों को तुच्छ घोषित कराने का प्रयास भी चलता रहा लेकिन यह कोशिश असफल ही रही। इसके अलावा अनेक अरबी इतिहासकारों ने भी कहा कि जाट ही भारत वर्ष के असल आर्य है क्योंकि ये इतिहासकार तो सारे भारत वर्ष को ही आर्य जाटों का देश मानते थे। इलियट साहब ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ इण्डिया" अरब इतिहासकारों का हवाला देकर इसी बात को दोहराया है कि इसके अलावा डा. ट्रम्प, बीम्स, सर रिजले, सर जेम्स, ग्रियर्सन, भाई परमानन्द, यदुनाथ सरकार, प्रो. इन्द्र, स्वर्गीय राजा लक्ष्मण सिंह, कालिका रंजन कानूनगो योगेन्द्र पाल शास्त्री, कैप्टन दलीप सिंह अहलावत, ले. रामस्वरूप जून, यू. एन. शर्मा, डॉ. देशराज, पं. लेखराम आदि सुप्रसिद्ध इतिहासकारों और विद्वानों ने एक स्वर में कहा है कि जाट नस्ल से आर्य हैं। उपरोक्त उदाहरणों से यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि जाट न तो शको, न सिंथियनों और ना ही हुणों की सन्तान है। जाट विशुद्ध रूप से आर्य है। इतिहास इस बात का साक्षी हैं कि जब हुणों शको व सिंथियनों का कहीं नामों निशान भी नहीं था, जाट उस समय भी भारतवर्ष पर राज करते थे।

जाट इतिहास न लिखा जाने की कमी ने जाटों को उनके उच्च स्थानों से गिराने में बहुत सहायता दी है। मथूरा मेमायर्स के लेखक मि. ग्राउस ने जाटों को अपना इतिहास न लिखने पर बहुत फटकार लगाई। वास्तव में उनकी कोई एतिहासिक पुस्तक न पाकर दूसरे लोगों से जैसा उन्होंने सुना था या बताया गया, वे लिखने को विवश हुए। यह सिद्ध करना कुछ भी कठिन नहीं है कि जाट इंडोआर्यन हैं जिन्हें किसी इतिहासकार व गजेटियर के संपादक ने इंडोसिंथियन लिख दिया क्योंकि वे जाटों के भारतीय इतिहास से अनभिज्ञ थे। 90 प्रतिशत इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से जाटों को प्राचीन आर्यों के विशुद्ध वंशज बताया है। जाटों ने इस बात के विरूद्ध न तो आवाज उठाई कि कोई उनके विरूद्ध कौन कैसा प्रचार कर रहा है। न ही कोई प्रतिवाद किया। फिर भी निष्पक्ष विद्वान इतिहासकारों को यह स्पष्ट रूप से मानना पड़ा कि जाट आर्य हैं और प्राचीन आर्यों के वास्तविक उत्तराधिकारी हैं। जाट इतिहास पेज 67–68 डॉ. देशराज व लेखक भी इससे सहमत है।

डॉ. ट्रिम्प कहते हैं कि "सिन्ध की आदि निवासी जाति जाट है।" इसमें कोई संशय नहीं हैं कि ये जाट इस देश के निवासी दिखलाई देते हैं, वे विशुद्ध आर्य वंश से ही हैं"।

श्री कुद्रयात्सेन का मत है कि जनगणना की सूचना, दूसरे सरकारी पत्र प्रमाण, नृव्यविद्या की जांच (इबस्टन, क्रुक, रोज, वर्तमान ग्रन्थकार) परम्परा से जाटों को एक अलग कुल या कुलों – वंशों का संघ (गण) मानते है"। कुछ लेखकों का कहना है कि भारत पर सिंथियनों के आक्रमण से काफी समय पहले जाट लोग सिंध प्रान्त में आबाद थे और उनका संबंध महाभारत के युद्धों और योद्धाओं से था।

जहां भी रक्षा का प्रश्न उठता है, बलिदान की आवश्यकता होती हैं वहां इन जाट वीरों को सबसे पहले याद किया जाता है। महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जाटों की गौरवपूर्ण बल शक्ति पर भारतीयों का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने भाषण में कहा था कि "जाट भारतीय राष्ट्र की रीढ़ है। भारत को इस साहसी वीर जाति से बहुत बड़ी आशाएं हैं"।

अरब यात्री अनुलारिह मुहम्मद बिन अहमद अलबुरूनी ने "तहकीकए हिन्द" में भगवान श्री कृष्ण को जाट लिखा है। स्पष्ट है जाट, संघ क नाम से जाट, किन्तु जाति के नाम से आर्य हैं।

जाटस दी एनशियन्ट रूलरज लेखक डॉ. भीम सिंह दहिया ने पृ. 81 पर भविष्य–पुराण का हवाला देकर लिखा है कि "जाट आर्य है" आगे डॉ. दहिया साहब ने पृ. 97–98 पर जाटों के बारे में लिखा है कि "प्रसिद्ध इतिहासकारों के शब्दों में वर्तमान समय के जाट, शारीरिक बनावट, भाषा,

चरित्र, बुद्धि शासन की योग्यता तथा सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से निसन्देह प्राचीन वैदिक आर्यों के उच्चतर प्रतिनिधि हैं। बनिस्बत (तुलना में) हिन्दू जाति के उन तीन ऊंचे कुल के किसी भी सदस्य से, जिन्होंने अवश्य ही अपना मौलिक चरित्र बहुत कुछ खो दिया है"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जाटों को विशुद्ध रूप से आर्य माना है। स्वामी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एकादश पृ. 227–28 पर जाट जी और पोप जी की एक घटना का उदाहरण देकर जाट जी का बड़ा सम्मान किया है। क्योंकि पोप जी की पोपलीला का जाट द्वारा भण्डाफोड़ किया गया था, तो स्वामी जी ने जाट को बड़ा सम्मान दिया था। स्वामी जी पोप लिला के बहुत ही खिलाफ थे। उन्होंने पोप लिला के खिलाफ काफी प्रचार किया था जिससे सामाजिक कुरितियों को काफी हद तक कम करने का स्वामी जी को बल मिला था।

जाट धर्म, भाषा, संस्कृति सभ्यता, शासन पद्धति के आधार पर पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी आर्य हैं। एक ईश्वर में विश्वास, गुण कर्म स्वभाव आधार पर छोटा बड़ा समझना, जगत जननी स्त्री जाति का पूर्ण सम्मान करना, प्रान्तीय भेदभाव से दूर रहना, विद्वानों का सम्मान करना, युद्ध व कृषि के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर करना, इसको संक्षेप में "सम्मान के साथ जीना और सम्मान के साथ मरना" जाटों की विशेषताएं रही है जो कि ये सभी विशेषताएं आर्यों में ही पाई जाती हैं। जाट–समाज–धर्म सुधार में सबसे आगे रहते हैं। इनकी समाज, मानव–समाज सेवा के गुणों के कारण ही इन्हें भिन्न–भिन्न स्थानों पर चौधरी, ठाकुर पटेल, सरदार प्रधान, मिर्धा, फौजदार, मलिक/मालिक आदिनामों से सम्मान के साथ सम्बोधित किया जाता है। ये उपलब्धियां जाटों का क्षत्रिय होना भी सिद्ध करती हैं।

जाट एक ईश्वर को ही मानते हैं। वेदों के आधार पर ईश्वर के एक होने के लिए सम्पूर्ण आर्य साहित्य ने बल दिया है। महात्मा बुद्ध ने जब ढकोसलों और पाखण्डों के विरूद्ध समाज में घोषणा की तो सभी जाट संघों ने बौध धर्म अपना लिया था और जितने भी प्राचीन काल में शक्तिशाली सम्राट हुए, जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक महान, सम्राट विक्रमादित्य, सम्राट कनिष्क, समुन्द्रगुप्त, चन्द्रगुप्त(2), हर्षवर्धन, सम्राट अनंगपाल तोमर आदि सभी जाट शासकों ने बौध धर्म अपना लिया था क्योंकि महात्मा बुद्ध भी स्वयं जाट थे। जब अरब के मरूस्थल में उठते हुए "लाइलाह इलिल्लाह खुदा एक ही है" के नारे को पश्चिमी भारत के सीमान्त प्रदेश की एक ईश्वर विश्वासी जाट जनता ने सुना तो उधर सामुहिक रूप से मुसलमान होकर एक खुदा की इबादत करने लगे। शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट आदि के प्रयत्नों से जब नवीन हिन्दु धर्म की स्थापना की गई तब जाट उन पौराणिको की ओर आकर्षित न होकर उनके फंदें में न फंसे। उनके विचारों में एक ईश्वरवाद के विपरित अस्थिरता आना ही चाहती थी कि ऋषिवर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपना दिव्य सन्देश सुनाकर उन्हें शुद्ध वैदिक मत का मार्ग दिखाया। हिन्दु जाटों ने उनके उपदेशों के सामने आत्म समर्पण कर दिया। आज परिणाम यह है कि हिन्दू कहलाने वाले सम्पूर्ण जाट वैदिक मतानुयायी आर्य समाजी हैं। वैसे तो आज के समाज में काफी कुरितियों के कारण आर्य समाज दम तोड़ने के कगार पर खड़ा है, क्योंकि जाटों में ही आर्य समाज का भाव देखा गया हैं क्योंकि जाट ही सच्चे मायनों में वैदिक आर्यों की सन्तान हैं। इसी प्रकार गुरू नानक जी ने भी जब सिक्ख सम्प्रदाय की नीवं डाली तो पंजाब के जाटों ने ही सर्वथा सामुहिक रूप से सिक्ख धर्म को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार से समस्त भारत के जाट वैदिक धर्मी रूप में एक ही ईश्वर को मानते थे और उसी का ध्यान करते थे। जो जाटों की अपनी निराली विशेषता है।

गुण कर्मानुसार छोटा बड़ा मानना – आर्य संस्कृति की प्रबल पोषक वर्ण व्यस्था का खात्मा होने पर वंशों की ऊंच–नीच की इतनी प्रबलता हुई कि वर्ण से नीचे जाति–जाति में पारस्परिक घृणा के भाव घर कर गए। आखिरकार यह हुआ कि राम के वंशज, कृष्ण के वंशज दूसरो को तुच्छ मानने लगे और समाज में यह जहर फैलता ही चला गया। उनकी ऊंच–नीच का यह परिणाम है कि प्रयत्न किए जाने पर भी आज तक कभी भी ब्राह्मणों का कोई संगठन सम्पन्न नहीं हुआ। अहिरों में नंदवंशी और यादव, गुजरों में बडगुजर, मराठों में भौंसले आदि सभी अपने आपको श्रेष्ठ मानने लगे। जाटों में सबसे अधिक लगभग 5000 गोत्र हैं। जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है।

स्त्रियों को समान अधिकार भी प्राचीन समय से ही जाटों में ही दिए जाते है जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है। दूसरी जातियों में तो विधवा को अभिषाप माना जाता था लेकिन जाटों में ऐसा नहीं है वैदिक काल से ही विधवा का विवाह दूसरे भाईयों से करवा दिया जाता था, यह प्रथा वैदिक काल से ही आर्यों की प्रथा रही है। यदि किसी अन्य जाति की लड़की का विवाह जाटों में होता है तो उसे वही जाटनी वाला सम्मान मिलता है क्योंकि जाटों की एक कहावत है कि जाट के घर आई और जाटनी कहलाई।

लोकश्रुति के अनुसार जाट जाति अपने जैसे ही वीर पुत्रों को जन्म देती हैं। इस प्रकार के सभी सम्मान से जाट जाति क्षत्रियों में वह पारसमयी है जो लोहे को सोना बनाने की क्षमता रखती है। जाटों ने घर, बाहर सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को समानता प्रदान की हुई है। अपने भाई की विधवा से विवाह करना जाटों की प्रथा वैदिक शास्त्रों के भी अनुकूल है

किसी की बात को दिल पर मत लीजिए क्योंकि जिसका जैसा संस्कार होता है, वैसा ही उसका व्यवहार होता है।

जो कि जाटों का आर्य होने का मजबूत प्रमाण दर्शाता है। चौथी शताब्दी में सम्राट चन्द्रगुप्त(2) ने अपने भाई समुन्द्रगुप्त की विधवा से ही विवाह कर लिया था। वे धारण गोत्र के जाट थे। गुप्तकाल के सभी शासक धारण गोत्र के जाट शासक थे। इनके समय में भारतवर्ष को संसार में सोने की चिड़ियां कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ था। इनकी राजधानी मगध थी। 1300 ई. में मालदेव राठौर ने अपनी विधवा बेटी की शादी राणा हमीर देव मेवाड़ शासक से कर दी थी। आजकल हिन्दुओं की अन्य जातियों ने भी जाटों के देखा–देखी विधवा विवाह करवाना शुरू कर दिया।

प्राचीन आर्य मांस नहीं खाते थे और जाटों में भी मांस न खाने की परम्परा अब तक आ रही है। समय के फेर में अब हिन्दूओं में बहुत सी जातियों में मास खाने लग गए हैं। लेकिन जाटों में आज भी बहुत ही कम लोग मांस खाते है क्योंकि ये प्राचीन आर्यों की ही संतान है।

भेदभाव से परे रहना। बौध काल के पश्चात नवीन हिन्दु धर्म के समय हिन्दुओं की सभी जातियों में ऊँच–नीच का भेदभाव प्रबल रूप से पैदा हो गया। प्राचीन भारत की सभी विशेषताओं की सच्ची स्मारक जाट जाति में आज भी अखिल भारतीय अटूट संबंध बना हुआ है। केवल जाट कह देने से ही सारे भारतवर्ष में बिना भेदभाव के खानपान और रोटी बेटी का संबंध आज भी विद्यमान हैं सामाजिक संगठन के प्रेमभाव से सभी स्थानों के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी जाट आपस में एक है। वंशागत, ऊँच–नीच से दूर यदि कोई संगठन में आदर जाती है, तो वह केवल जाट ही है जोकि केवल वैदिक आर्यों के ही गुण रखने वाली जाति है।

जाटों का शारीरिक गठन, धर्म, समाज, विवाह, पंचायत और भाषा के विषय में सभी प्रकार से जाटों और आर्यों में कोई भेद नहीं हैं क्योंकि जाट ही वैदिक आर्यों की संतान हैं। विवाह शादी करते समय जाटों में अपना, मां का, दादी व मौसी, पिता की दूसरी व्याहता आदि का गोत्र छोड़ते हैं। यह विशेषता जाटों के आर्य नस्ल होने का दृढ़ प्रमाण है। जाटों के इलावा दूसरी जातियों में यह प्रथा नाममात्र ही है। इसके इलावा कई गोत्रों में भाईचारा होने पर भी आपस में विवाह शादी के समय गोत्र छोड़ते है जैसे दलाल, देसवाल, मान, सिहाग, अहलावत, ओहलाण, पेहलाण, दुहन और मलिक का भी भाईचारा है। जाट तो अपने गांव की सीमा के साथ लगते गांव में शादी नहीं करते क्योंकि ये गांव तो भाईचारे में ही आ जाते हैं। कई हिन्दु जातियाँ केवल अपना ही गोत्र छोड़ती हैं।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से स्वतः ही ज्ञात हो जाता है कि केवल जाट ही तो आर्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जब दोबारा आर्य समाज का प्रचार किया तो उनके साथ इस कार्य में केवल जाटों ने ही कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। प्राचीन वैदिक काल से आज तक जाटों ने ही आर्य विचारों की पालना की है अतः जाट ही सच्चे आर्य है। इनके इलावा और किसी जाति धर्म में जाटों से बड़ा आर्य कोई भी नहीं हो सकता।

हमेशा दिलों में अमर रहेंगे दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

दीनबन्धु चौधरी सर छोटूराम बड़े बुद्धिमान, विद्वान, प्रवीण, राजनीतिज्ञ, कुशल शासक, ऋषि दयानन्द सरस्वती के सच्चे शिष्य, कर्मयोगी, ईमानदार, निपुण कार्यकर्त्ता, चरित्रवान, समाज सुधारक, सिद्धान्तों के धनी, दलितों एवं मजदूरों के हितकारी एवं रक्षक, किसानों के मसीहा, निडर नेता, उदार हृदय, साहसी वीर, सच्चे देशभक्त और अंग्रेजों के विरोधी थे।

19वीं शताब्दी में भारतवर्ष में बड़े–बड़े महान नेता महर्षि दयानन्द सरस्वती, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, स्वामी विवेकानन्द जी, ठाकुर रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि पैदा हुए। जिन्होंने अपने–अपने ढंग से भारतवर्ष की आजादी, समाज सुधार, सच्चे धर्म की प्रेरणा और मानव जाति की उन्नति के लिए महान कार्य किये। इसी शताब्दी में पैदा होने वाले चौ. सर छोटूराम जी भी इन्हीं प्रसिद्ध महान व्यक्तियों की मण्डली में एक योग्य नेता के रूप में समानता रखते हैं। प्रत्येक नेता देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अपने ढंग से कार्य कर गया। महर्षि दयानन्द जी का देश की सच्ची स्वतन्त्रता का लक्ष्य था, भारतवर्ष में धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों को दूर करके देश के नागरिकों को वैदिक धर्मी बनाकर अंग्रेजों को यहां से खदेड़ कर आजादी प्राप्त करना। महात्मा गांधी तथा उनके साथियों का लक्ष्य था भारतवर्ष को अहिंसक आंदोलनों द्वारा, अंग्रेजों को यहां से निकालकर आजाद करवाना। इसमें वे सफल हुए परन्तु देश के दो भाग करके।

आज के युग में दो ही महान नेता ऐसे थे जो देश को संयुक्त रखकर स्वतन्त्रता प्राप्त करते तथा देश को अखण्ड रखते। वे थे दीनबन्धु चौ. छोटूराम और दूसरे नेताजी सुभाषचन्द्र

बोस। खेद है तथा यह देश का दुर्भाग्य था कि वे दोनों ही आजादी मिलने से पूर्व ही शहीद हो गये। देश को अखण्ड रखने में चौ. सर छोटूराम इन तमाम उच्च कोटि के कांग्रेसी नेताओं से बहुत महान एवं सच्चे देशभक्त थे।

चौधरी छोटूराम सच्चे अर्थों में राजर्षि थे। जो व्यक्ति राजगद्दी पर बैठकर भी तपस्वियों का जीवन व्यतीत करे अर्थात राजा बनकर भी फकीर बना रहे वही राजर्षि कहलाता है। वास्तव में वे एक राजर्षि थे।

चौ. छोटूराम की जो विशेषताएं लिख दी गई हैं उन सब का प्रमाण उनकी इस जीवनी के वर्णन में उचित स्थान पर लिख दिया जायेगा।

दीनबन्धु चौ. सर छोटूराम में सबसे अद्भुत विशेषता यह थी कि उन्होंने बिना मांगे ही अपनी बुद्धि द्वारा किसानों की आर्थिक, सामाजिक, कष्टपूर्ण जीवन तथा अशिक्षित दशा को सुधार कर उनकी चौमुखी उन्नति की। इसी कारण तो उनको किसानों का मसीहा कहा गया है। इस आधुनिक युग में संयुक्त पंजाब के शोषित तथा असहाय किसानों को चौ. छोटूराम ने हर पहलू से उन्नत किया, जिसकी बराबरी अन्य कोई नहीं कर सका है। सर चौ. छोटूराम ने किसानों की जो उन्नति की उसी से प्रेरणा लेकर आज भारतवर्ष के राजनीतिज्ञ नेताओं ने किसानों की ओर ध्यान देना आरम्भ किया है।

सर चौ. छोटूराम ने अखण्ड पंजाब के मजदूरों, हरिजनों, दरिद्रों, पिछड़े वर्ग तथा दु:खियों की सहायता की, जिससे आपको दीनबन्धु कहा जाता है।

आपका जीवन निर्धनता और समृद्धि ने मानो लगभग आधा आधा ही बांट लिया है। जन्म सन 1881 से 1913 ई. तक का 31–32 वर्षों का समय निर्धनता का था और उसी में आपने अपने जीवन का निर्माण किया। सन 1913 से 1945 (देहांत 9 जनवरी, 1945) तक लगभग उतने ही वर्षों का समय समृद्धि एवं शान शौकत का कहा जा सकता है। जीवन के ये दोनों समय अन्धकार एवं प्रकाश के रूप में भी विकसित किये जा सकते हैं। इन्हें फकीरी और राजसी भी कह सकते हैं। परन्तु इस दिव्य जीवन की दोनों विशेषताएं सदा बनी रहीं। फकीरी में राजसी ओज और राजसी दशा में फकीरी सादगी सदैव झलकती रही। राजसी ओज का प्रतिनिधित्व उनकी अदम्य स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान की भावना सदा प्रेरित करती रही। जो किसी भी अवस्था में नहीं दबी, समय–समय पर प्रत्येक अपेक्षित प्रसंग में उभरकर अपना वास्तविक रूप दिखाती रही। इनके प्रमाण आगे लिखित घटनाओं से ज्ञात हो जायेंगे।

चौ. सर छोटूराम के जीवन काल को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा।

2. नौकरी तथा वकालत।

3. राजनीति

जन्म, बाल्यकाल और शिक्षा

चौ. छोटूराम जी का जन्म माघ सुदी संवत 1938 विक्रमी तदनुसार 24 नवम्बर सन 1881 के दिन गढ़ी सांपला गांव जिला रोहतक में ओहलान गोत्र के एक साधारण जाट किसान चौ. सुखीराम के कच्चे घर में हुआ था। आपकी माता जी का नाम श्रीमती सिरयां देवी था। दादा श्री रामदास और परदादा श्री रामरत्न थे। आपका नाम रामरिछपाल रखा गया। दो भाइयों, नेकीराम और रामस्वरूप से छोटा होने के कारण, घर के लोग रामरिछपाल को लाड़–प्यार से छोटू कहने लगे। आगे चलकर वह छोटू से छोटूराम कहलाने लगे।

आपके पिता चौ. सुखीराम एक साधारण किसान थे जिनके पास खेती करने के लिए काम चलाऊ भूमि थी। वे कुछ रूई का लेन–देन भी करते थे जिसमें उनको काफी नुक्सान हो गया। फलस्वरूप उनके जिम्मे कुछ कर्जा हो गया। उनका देहान्त 1905 ई. में हो गया और उनका छोड़ा हुआ कर्जा चौ. छोटूराम ने अपनी वकालत से पैसा कमाकर सन 1913 में चुकाया।

छोटूराम बचपन से बड़े नटखट थे। गली–पड़ोस के बच्चों से मारपीट करना उनके लिए मामूली बात थी। प्रकृति का यह नियम है कि बचपन में कुछ विशेषतायें रखने वाले बालक ही भविष्य में महापुरूष हुए हैं। दूसरे बालकों के साथ मारपीट या झगड़ा करने से तंग आकर उसके चाचा चौ. राजेराम ने छोटू को जनवरी 1, 1891 ई. को सांपला पाठशाला में दाखिल करा दिया। मास्टर मोहनलाल ने उनका नाम रजिस्टर में छोटूराम लिख लिया। सन 1895 में प्राईमरी परीक्षा में छोटूराम जिले में प्रथम आया और वजीफा प्राप्त किया।

बाल विवाह

यहां यह उल्लेखनीय है कि प्रारम्भिक शिक्षा के समय ही लगभग 10–11 वर्ष की आयु में छोटूराम का विवाह 5 जून, 1893 को श्रीमती ज्ञानोदेवी के साथ सम्पन्न हो गया था। श्रीमती ज्ञानोदेवी के पिता का नाम चौ. नान्हासिंह गुलिया गोत्र का जाट था, जिसका गांव बादली के निकट खेड़ी जट था। बाल विवाह के बावजूद भी छोटूराम अपनी पढ़ाई में जुटे रहे।

माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए छोटूराम ने झज्जर के मिडल स्कूल में दाखिल होना पड़ा। उन दिनों झज्जर के लिए कोई सड़क नहीं थी, पैदल ही आवागमन होता था। छात्रावास भी नहीं होते थे। घर से ही खाने–पीने

की चीजें महीने या पन्द्रह दिन के लिए पीठ या सिर पर लादकर ले जानी होती थी।

अमेरिका के प्रेसीडेण्ट श्री विल्सन भी एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। वे नित्य ग्यारह मील पैदल चलकर पढ़ने जाते थे। हमारे भूतपूर्व भारत के प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी निर्धन होने के कारण गंगा पार करने के लिये किश्ती वाले को केवल छः पैसे देने में भी असमर्थ थे। अतः अपनी पाठशाला जाने के लिए प्रतिदिन अपने सामान के साथ पढ़ने जाने व आने के लिए गंगा नदी को स्वयं तैर कर पार करते थे। यही दशा छोटूराम की भी थी। वे अपने गांव से 20–22 मील दूर झज्जर तक कभी पन्द्रह दिन का, कभी महीने भर का आटा, घी, दाल आदि सामान अपने सिर पर रखकर पैदल जाते थे।

उन दिनों पंजाब में मिडल की परीक्षा यूनिवर्सिटी की होती थी। उस वर्ष यानी सन 1899 में मिडल की परीक्षा में पंजाब भर से जो हजारों विद्यार्थी बैठे थे, उनमें सबसे अधिक नम्बर श्री महताब राय के, दूसरे नम्बर पर चौ. छोटूराम थे और तीसरे नम्बर पर एक बंगाली युवक किशोरी मोहन आये थे। छोटूराम ने वजीफा प्राप्त किया।

एक महान स्वतंत्रता सेनानी शहीदे-आजम भगत सिंह

– लक्ष्मण सिंह फौगाट, (मो० 6280830760)

भगत सिंह भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर इन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अभूतपूर्व साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुकाबला किया। पहले लाहौर में बर्नी सैंडर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय संसद (सेण्ट्रल असेम्बली) में बम–विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलन्दी प्रदान की। इन्होंने असेम्बली में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने इन्हें २३ मार्च १९३१ को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फाँसी पर लटका दिया।

जन्म और परिवेश

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 (अश्विन कृष्णपक्ष सप्तमी) को प्रचलित है परन्तु तत्कालीन अनेक साक्ष्यों के अनुसार उनका जन्म 27 सितंबर 1907 ई० को एक किसान परिवार में हुआ था। इनका जन्म पश्चिमी पंजाब बंगा गांव में हुआ है जो अब पाकिस्तान में है। उनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह और माता का नाम विद्यावती कौर था। अमशतसर में १३ अप्रैल १९१९ को हुए जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आजादी के लिए नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी।

वर्ष 1922 में चौरी–चौरा हत्याकांड के बाद गाँधी जी ने जब किसानों का साथ नहीं दिया तब भगत सिंह बहुत निराश हुए। उसके बाद उनका अहिंसा से विश्वास कमजोर हो गया और वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सशस्त्र क्रांति ही स्वतंत्रता दिलाने का एक मात्र रास्ता है। उसके बाद वह चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में गठित हुई गदर दल के हिस्सा बन गए। काकोरी काण्ड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित ०४ क्रान्तिकारियों को फाँसी व १६ अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड़ गए और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन। इस संगठन का उद्देश्य सेवा, त्याग और पीड़ा झेल सकने वाले नवयुवक तैयार करना था।

भगत सिंह ने राजगुरु के साथ मिलकर १७ दिसम्बर १९२८ को लाहौर में सहायक पुलिस अधीक्षक रहे अंग्रेज अधिकारी जे० पी० सांडर्स को मारा था। इस कार्रवाई में क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने उनकी पूरी सहायता की थी। क्रान्तिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर भगत सिंह ने वर्तमान नई दिल्ली स्थित ब्रिटिश भारत की तत्कालीन सेण्ट्रल एसेम्बली के सभागार संसद भवन में ८ अप्रैल १९२९ को अंग्रेज सरकार को जगाने के लिये बम और पर्चे फेंके थे। बम फेंकने के बाद वहीं पर दोनों ने अपनी गिरफ्तारी भी दी।

क्रान्तिकारी गतिविधियाँ

उस समय भगत सिंह करीब बारह वर्ष के थे जब जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ था। इसकी सूचना मिलते ही भगत सिंह अपने स्कूल से १२ मील पैदल चलकर जलियाँवाला बाग पहुँच गए। इस उम्र में भगत सिंह अपने चाचाओं की क्रान्तिकारी किताबें पढ़ कर सोचते थे कि इनका रास्ता सही है कि नहीं ? गांधी जी का असहयोग आन्दोलन छिड़ने के बाद वे गान्धी जी के अहिंसात्मक तरीकों और क्रान्तिकारियों के हिंसक आन्दोलन में से अपने लिए रास्ता चुनने लगे। गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन को रद्द कर देने के कारण उनमें थोड़ा रोष उत्पन्न हुआ, पर पूरे राष्ट्र की तरह वो भी महात्मा गाँधी का सम्मान करते थे। पर उन्होंने गाँधी जी के अहिंसात्मक आन्दोलन की जगह देश की स्वतन्त्रता के लिए हिंसात्मक क्रांति का मार्ग अपनाना अनुचित नहीं समझा। उन्होंने जुलूसों में भाग लेना प्रारम्भ किया तथा कई क्रान्तिकारी दलों के सदस्य बने। उनके दल के प्रमुख क्रान्तिकारियों में चन्द्रशेखर आजाद,

सुखदेव, राजगुरु इत्यादि थे। काकोरी काण्ड में ४ क्रान्तिकारियों को फाँसी व १६ अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि उन्होंने १६२८ में अपनी पार्टी नौजवान भारत सभा का हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन में विलय कर दिया और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

लाला जी की मृत्यु का प्रतिशोध

१६२८ में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए भयानक प्रदर्शन हुए। इन प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर अंग्रेजी शासन ने लाठी चार्ज भी किया। इसी लाठी चार्ज से आहत होकर लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई। अब इनसे रहा न गया। एक गुप्त योजना के तहत इन्होंने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट को मारने की योजना सोची। सोची गई योजना के अनुसार भगत सिंह और राजगुरु लाहौर कोतवाली के सामने व्यस्त मुद्रा में टहलने लगे। उधर जयगोपाल अपनी साइकिल को लेकर ऐसे बैठ गए जैसे कि वो खराब हो गई हो। गोपाल के इशारे पर दोनों सचेत हो गए। उधर चन्द्रशेखर आजाद पास के डी०ए०वी० स्कूल की चारदीवारी के पास छिपकर घटना को अंजाम देने में रक्षक का काम कर रहे थे।

१७ दिसंबर १६२८ को करीब सवा चार बजे, ए०एस०पी० सॉण्डर्स के आते ही राजगुरु ने एक गोली सीधी उसके सर में मारी जिससे वह पहले ही मर जाता। लेकिन तुरन्त बाद भगत सिंह ने भी ३–४ गोली दाग कर उसके मरने का पूरा इन्तजाम कर दिया। ये दोनों जैसे ही भाग रहे थे कि एक सिपाही चनन सिंह ने इनका पीछा करना शुरू कर दिया। चन्द्रशेखर आजाद ने उसे सावधान किया – "आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।" नहीं मानने पर आजाद ने उसे गोली मार दी और वो वहीं पर मर गया। इस तरह इन लोगों ने लाला लाजपत राय की मौत का बदला ले लिया।

एसेम्बली में बम फेंकना

भगत सिंह यद्यपि रक्तपात के पक्षधर नहीं थे परन्तु वे वामपंथी विचारधारा को मानते थे, तथा कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों से उनका ताल्लुक था और उन्हीं विचारधारा को वे आगे बढ़ा रहे थे। यद्यपि, वे समाजवाद के पक्के पोषक भी थे। कलान्तर में उनके विरोधी द्वारा उनको अपने विचारधारा बता कर युवाओ को भगत सिंह के नाम पर बरगलाने के आरोप लगते रहे है। कॉग्रेस के सत्ता में रहने के बावजूद भगत सिंह को कॉंग्रेस शहीद का दर्जा नही दिलवा पाए, क्योंकि वे केवल भगत सिंह के नाम का इस्तेमाल युवाओं को अपनी पार्टी से जोड़ने के लिए करते थे। उन्हें पूँजीपतियों की मजदूरों के प्रति शोषण की नीति पसन्द नहीं आती थी। उस समय चूँकि अँग्रेज ही सर्वेसर्वा थे तथा बहुत कम भारतीय उद्योगपति उन्नति कर पाये थे, अतः अंग्रेजों के मजदूरों के प्रति अत्याचार से उनका विरोध स्वाभाविक था। मजदूर विरोधी ऐसी नीतियों को ब्रिटिश संसद में पारित न होने देना उनके दल का निर्णय था। सभी चाहते थे कि अंग्रेजों को पता चलना चाहिए कि हिन्दुस्तानी जाग चुके हैं और उनके हृदय में ऐसी नीतियों के प्रति आक्रोश है। ऐसा करने के लिये ही उन्होंने दिल्ली की केन्द्रीय एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई थी।

भगत सिंह चाहते थे कि इसमें कोई खून खराबा न हो और अँग्रेजों तक उनकी 'आवाज' भी पहुँचे। हालाँकि प्रारम्भ में उनके दल के सब लोग ऐसा नहीं सोचते थे पर अन्त में सर्वसम्मति से भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त का नाम चुना गया। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ८ अप्रैल १६२६ को केन्द्रीय असेम्बली में इन दोनों ने एक ऐसे स्थान पर बम फेंका जहाँ कोई मौजूद न था, अन्यथा उसे चोट लग सकती थी। पूरा हाल धुएँ से भर गया। भगत सिंह चाहते तो भाग भी सकते थे पर उन्होंने पहले ही सोच रखा था कि उन्हें दण्ड स्वीकार है चाहें वह फाँसी ही क्यों न होय अतः उन्होंने भागने से मना कर दिया। उस समय वे दोनों खाकी कमीज तथा निकर पहने हुए थे। बम फटने के बाद उन्होंने "इंकलाब–जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद–मुर्दाबाद!" का नारा लगाया और अपने साथ लाये हुए पर्चे हवा में उछाल दिए। इसके कुछ ही देर बाद पुलिस आ गई और दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल के दिन

जेल में भगत सिंह करीब २ साल रहे। इस दौरान वे लेख लिखकर अपने क्रान्तिकारी विचार व्यक्त करते रहते थे। जेल में रहते हुए भी उनका अध्ययन लगातार जारी रहा। उनके उस दौरान लिखे गये लेख व सगे सम्बन्धियों को लिखे गये पत्र आज भी उनके विचारों के दर्पण हैं। अपने लेखों में उन्होंने कई तरह से पूँजीपतियों को अपना शत्रु बताया है। उन्होंने लिखा कि मजदूरों का शोषण करने वाला चाहें एक भारतीय ही क्यों न हो, वह उनका शत्रु है। उन्होंने जेल में अंग्रेजी में एक लेख भी लिखा जिसका शीर्षक था मैं नास्तिक क्यों हू? जेल में भगत सिंह व उनके साथियों ने ६४ दिनों तक भूख हडताल की। उनके एक साथी यतीन्द्रनाथ दास ने तो भूख हड़ताल में अपने प्राण ही त्याग दिये थे।

फाँसी

26 अगस्त, 1930 को अदालत ने भगत सिंह को भारतीय दंड संहिता की धारा 129, 302 तथा विस्फोटक पदार्थ अधिनियम की धारा 4 और 6 एफ तथा आईपीसी की धारा 120 के अंतर्गत अपराधी सिद्ध किया। 7 अक्तूबर, 1930 को अदालत के द्वारा 68 पृष्ठों का निर्णय दिया, जिसमें भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फाँसी की सजा सुनाई गई। फाँसी की सजा सुनाए जाने के साथ ही लाहौर में धारा 144 लगा दी गई। इसके बाद भगत सिंह की फाँसी की माफी के लिए प्रिवी परिषद

में अपील दायर की गई परन्तु यह अपील 10 जनवरी, 1931 को रद्द कर दी गई। इसके बाद तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष पं. मदन मोहन मालवीय ने वायसराय के सामने सजा माफी के लिए 14 फरवरी, 1931 को अपील दायर की कि वह अपने विशेषाधिकार का प्रयोग करते हुए मानवता के आधार पर फांसी की सजा माफ कर दें। भगत सिंह की फाँसी की सजा माफ करवाने हेतु महात्मा गाँधी ने 17 फरवरी 1931 को वायसराय से बात की फिर 18 फरवरी, 1931 को आम जनता की ओर से भी वायसराय के सामने विभिन्न तर्को के साथ सजा माफी के लिए अपील दायर की। यह सब कुछ भगत सिंह की इच्छा के खिलाफ हो रहा था क्यों कि भगत सिंह नहीं चाहते थे कि उनकी सजा माफ की जाए।

23 मार्च 1931 को शाम में करीब 7 बजकर 33 मिनट पर भगत सिंह तथा इनके दो साथियों सुखदेव व राजगुरु को फाँसी दे दी गई। फाँसी पर जाने से पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और जब उनसे उनकी आखरी इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि वह लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे और उन्हें वह पूरी करने का समय दिया जाए। कहा जाता है कि जेल के अधिकारियों ने जब उन्हें यह सूचना दी कि उनके फाँसी का वक्त आ गया है तो उन्होंने कहा था– "ठहरिए! पहले एक क्रान्तिकारी दूसरे से मिल तो ले।" फिर एक मिनट बाद किताब छत की ओर उछाल कर बोले – "ठीक है अब चलो।"

फाँसी पर जाते समय वे तीनों मस्ती से गा रहे थे –

मेरा रँग दे बसन्ती चोला, मेरा रँग दे।
मेरा रंग दे बसन्ती चोला। माय रँग दे बसन्ती चोला।।

फाँसी के बाद कहीं कोई आन्दोलन न भड़क जाये इसके डर से अंग्रेजों ने पहले इनके मृत शरीर के टुकड़े किये फिर इसे बोरियों में भरकर फिरोजपुर की ओर ले गये जहाँ घी के बदले मिट्टी का तेल डालकर ही इनको जलाया जाने लगा। गाँव के लोगों ने आग जलती देखी तो करीब आए। इससे डरकर अंग्रेजों ने इनकी लाश के अधजले टुकड़ों को सतलुज नदी में फेंका और भाग गए। जब गाँव वाले पास आए तब उन्होंने इनके मश्त शरीर के टुकड़ो कों एकत्रित कर विधिवत दाह संस्कार किया। और भगत सिंह हमेशा के लिए अमर हो गये। इसके बाद लोग अंग्रेजों के साथ–साथ गाँधी को भी इनकी मौत का जिम्मेवार समझने लगे। इस कारण जब गान्धी काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में हिस्सा लेने जा रहे थे तो लोगों ने काले झण्डों के साथ गाँधी जी का स्वागत किया। एकाध जगह पर गाँधी पर हमला भी हुआ, किन्तु सादी वर्दी में उनके साथ चल रही पुलिस ने बचा लिया।

व्यक्तित्व

जेल के दिनों में उनके लिखे खतों व लेखों से उनके विचारों का अन्दाजा लगता है। उन्होंने भारतीय समाज में लिपि (पंजाबी की गुरुमुखी व शाहमुखी तथा हिन्दी और अरबी एवं उर्दू के सन्दर्भ में विशेष रूप से), जाति और धर्म के कारण आयी दूरियों पर दुःख व्यक्त किया था। उन्होंने समाज के कमजोर वर्ग पर किसी भारतीय के प्रहार को भी उसी सख्ती से सोचा जितना कि किसी अंग्रेज के द्वारा किये गये अत्याचार को।

भगत सिंह को हिन्दी, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के अलावा बांग्ला भी आती थी जो उन्होंने बटुकेश्वर दत्त से सीखी थी। उनका विश्वास था कि उनकी शहादत से भारतीय जनता और उद्विग्न हो जायेगी और ऐसा उनके जिन्दा रहने से शायद ही हो पाये। इसी कारण उन्होंने मौत की सजा सुनाने के बाद भी माफीनामा लिखने से साफ मना कर दिया था। पं० राम प्रसाद "बिस्मिल" ने अपनी आत्मकथा में जो–जो दिशा–निर्देश दिये थे, भगत सिंह ने उनका अक्षरशः पालन किया। उन्होंने अंग्रेज सरकार को एक पत्र भी लिखा, जिसमें कहा गया था कि उन्हें अंग्रेजी सरकार के खिलाफ भारतीयों के युद्ध का प्रतीक एक युद्धबन्दी समझा जाये तथा फाँसी देने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाये। फाँसी के पहले ३ मार्च को अपने भाई कुलतार को भेजे एक पत्र में भगत सिंह ने लिखा था।

उन्हें यह फिक्र है हरदम, नयी तर्ज–ए–जफा क्या है?
हमें यह शौक है देखें, सितम की इन्तहा क्या है?
दहर से क्यों खफा रहें, चर्ख का क्या गिला करें।
सारा जहाँ अदू सही, आओ! मुकाबला करें।।

इन जोशीली पंक्तियों से उनके शौर्य का अनुमान लगाया जा सकता है। चन्द्रशेखर आजाद से पहली मुलाकात के समय जलती हुई मोमबती पर हाथ रखकर उन्होंने कसम खायी थी कि उनकी जिन्दगी देश पर ही कुर्बान होगी और उन्होंने अपनी वह कसम पूरी कर दिखायी।

"किसी ने सच ही कहा है, सुधार बूढ़े आदमी नहीं कर सकते। वे तो बहुत ही बुद्धिमान और समझदार होते हैं। सुधार तो होते हैं युवकों के परिश्रम, साहस, बलिदान और निष्ठा से, जिनको भयभीत होना आता ही नहीं और जो विचार कम और अनुभव अधिक करते हैं।" भगत सिंह क्या आप कल्पना कर सकते हैं, एक हुकूमत, जिसका दुनिया के इतने बड़े हिस्से पर शासन था, इसके बार में कहा जाता था कि उनके शासन में सूर्य कभी अस्त नहीं होता। इतनी ताकतवर हुकूमत, एक 23 साल के युवक से भयभीत हो गई थी।

ख्याति और सम्मान

उनकी मृत्यु की खबर को लाहौर के दैनिक ट्रिब्यून तथा न्यूयॉर्क के एक पत्र डेली वर्कर ने छापा। इसके बाद भी कई मार्कसवादी पत्रों में उन पर लेख छपे, पर चूँकि भारत में उन दिनों मार्कसवादी पत्रों के आने पर प्रतिबन्ध लगा था इसलिए भारतीय बुद्धिजीवियों को इसकी खबर नहीं थी। देशभर में उनकी शहादत को याद किया गया।

ठंडी चाय को जितना भी गर्म करो, उसका स्वाद नहीं लौटता.. रिश्ते भी कुछ ऐसे ही होते हैं।

दक्षिण भारत में पेरियार ने उनके लेख "मैं नास्तिक क्यों हूँ?" पर अपने साप्ताहिक पत्र कुडई आरसू के २२–२६ मार्च १६३१ के अंक में तमिल में सम्पादकीय लिखा। इसमें भगतसिंह की प्रशंसा की गई थी तथा उनकी शहादत को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ऊपर जीत के रूप में देखा गया था।

आज भी भारत और पाकिस्तान की जनता भगत सिंह को आजादी के दीवाने के रूप में देखती है जिसने अपनी जवानी सहित सारी जिन्दगी देश के लिये समर्पित कर दी। उनके जीवन ने कई हिन्दी फिल्मों के चरित्रों को प्रेरित किया।

जाटों की गोत्र-व्यवस्था

– डा. राजेन्द्र कुमार, (मो० 9897821175)

अनन्त काल से जाटों की पहचान उनके गोत्र है, जिन्हें वे गीत कहते हैं। यह गीत परम्परा अत्यधिक समृद्ध, प्राचीन और सुव्यवस्थित है। गोत्र से बाहर और जाति के भीतर विवाह की मान्यता उनकी समाज संरचना का मूल आधार है। प्राचीन संस्कृत साहित्य, जैसे पाणिनी के गणपाठ और कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अलावा विभिन्न प्राचीन अभिलेखों में असंख्य जाट गोतों के नाम मिलते है। ध्यान देने की बात यह है कि ये गोत्र नाम राजपूत, गूजर, पंजाबी, खत्री आदि समुदायों में भी मिलते हैं। जाति भेद होते हुए भी गोत्र समानता क्या यह सिद्ध नहीं करती कि समान गोत्र वाले उक्त लोगों के पूर्वज कभी साड़ी रहे होंगे। यदि ऐसा था तो यह भी विचार करने वाली बात है कि एक ही समुदाय के लोगों ने भिन्न–भिन्न जाति नाम कैसे अपना लिये। हम जानते हैं कि धर्म बदला जाता है पर जाति नहीं। लेकिन यहाँ तो बदली हुई जाति/समुदाय साफ दिखाई दे रहा है। इसका परीक्षण किया जाना चाहिए।

जाति एक द्रविड सस्था थी जो जाट समाज के लिए पूरी तरह विदेशी और अनुपयुकता थी। दरअसल भारत में जाति व्यवस्था जातियों के आधार पर सामाजिक वर्गीकरण का आदर्श नृवंशीय उदाहरण है। हिन्दू जाति व्यवस्था दो प्रमुख अवधारणाओं के इर्द–गिर्द संरचित है। जिसके माध्यम से समाज के सदस्यों को वर्गीकृत किया जाता है वर्ण और जाति। वर्ण समाज को चार व्यापक सामाजिक पदानुक्रम में विभाजित करता है, जिसमें ब्राह्मण और कुछ हद तक क्षत्रिय कुलीन वर्ग तथा सबसे अधिक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के रूप में समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज किये हुए थे। उसके बाद वैश्य (व्यापारी और किसान) और अन्त में शूद्र (हाथ से काम करने वाले कारीगर और मजदूर) आते थे। इस व्यवस्था के बाहर उत्पीडित, हाशिये पर पड़े सताये गये लोग और आदिवासी थे। समय के साथ जातियों के रूप से यह व्यवस्था कठोर और मजबूत होती गयी और इनकी संख्या बढ़ती गयी। इस व्यवस्था की उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी और पूर्व मध्यकालीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत में विभिन्न अभिजातवर्गीय शासकों द्वारा इसे रुपान्तरित किया जाता रहा, विशेष रूप से मुगल साम्राज्य के पतन के बाद और ब्रिटिश राज की स्थापना के समय और आजादी के बाद में भी।

9 जून, 2019 को बीबीसी न्यूज द्वारा प्रसारित काट इज इंडियाज कास्ट सिस्टम वार्ता में बताया गया कि भारत में लगभग 3 हजार जातियों और 25 हजार उपजातियां है। जहाँ तक जाटों के लिए जाति संज्ञा का इस्तेमाल करने की बात है। स्पष्ट हो चुका है कि जाट कोई जाति या प्रजाति नहीं है। बल्कि नागरिक सभ्यता से जुगुप्सा करने वाले स्वतंत्र कृषि और पशुपालक संस्कृति पोषकों का एक लघु समुदाय हैं। (अतल सिंह खोखर जाटों की उत्पत्ति एवं विस्तार पृ. 313) वैदिक काल में वंशों (संघों) का निर्माण गोत्र के रूप में हुआ और उसी रूप में जाट लोग भी संघबद्ध होते चले गये। गौत्र भी हिन्दू सांस्कृतिक अवधारणा थी, जिसे जाटों द्वारा गंभीरतापूर्वक आत्मसात् कर लिया गया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार ऋग्वैदिक शब्द के रूप में गोत्र का अर्थ है आगे बढ़ने वाली सन्तति। गो अर्थात गमन करने वाली (पृथ्वी) और त्र का अर्थ है सदैव गतिशील (बलने वाला) यानि संतान, जिसका विशिष्ट अर्थ है परिवार वंश और उससे जुड़े लोग (जैसे कि एक बाडे के भीतर झुण्ड हो)। (महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, पृ.199) यह परिभाषा अपेक्षाकृत बाद में, पहली बार पहली शताब्दी ईसापूर्व में छान्दोग्य उपनिषद में दर्ज की गयी। अर्थवेद में गोत्र शब्द सबसे पहले कबीले के अर्थ को साथ आता है, जिसे उसे एक विशेष अर्थ के साथ बरकरार रखा गया है। मोटे तौर पर यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो एक सामान्य पुरुष पूर्वज के वंशज हैं। गोत्र को प्रायः उपनाम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, किया जा सकता है, लेकिन यह उपनाम नहीं है, उससे अलग है और हिन्दुओं में विवाह में इसके महत्व के कारण इसे कठोरता से बनाये रखा जाता है। पाणिनि ने गोत्र को अपत्यम् पौत्रामृति गोत्रम् (अर्थात् गोत्र एक जोड़े पति–पत्नी के वंश या बंशज को दर्शाता है जिसमें एक पौत्र, एक पुत्र, एक माता यानि बहू शामिल है) कहते हुए बताया है कि गोत्र एक पैतृक परिवार को दर्शाता है, जिसमें उसके सदस्य अपने वंश का परिचय देते थे। गोत्र शब्द संस्कृत में गायों के बाड़े (गोठ) के लिए प्रमुक्त होता था। प्रत्येक गोत्र (बाड़े) का अपने एक समान पशुओं की पहचान के लिए अलग छाप–विहुन होता था। जिससे गायों के स्वामी को अपनी गायों की पहचान हो सके। इस विचार को उन भ्रमणशील ब्राह्मणों द्वारा आत्मसात् किया गया होगा,

जिन्होंने, जैसा कि प्राचीन ग्रन्थों में दिया गया है, आदिवासी स्त्रियों के साथ विवाह किया था।

गोत्र का प्रयोग दक्षिण भारतीय ब्राह्मणों का गुण विशेष था। बाद में क्षत्रियों और तदनन्तर निचली जातियों द्वारा इसका अनुकरण किया गया जो अपनी स्थित्ति को ऊपर उठाना वाहते थे। उन्होंने अपने कुल देवताओं के नामों को छिपाने के लिए ब्राह्मण गोत्रों के नाम उधार ले लिये। हो सकता है प्राचीन ऋषियों के नाम पर रखे जाटों के गोत्रों के पीछे भी यही कारण हो। गोत्र का उपयोग लगभग सार्वभौमिक रूप से उन विवाहों को रोकना है जो पारम्परिक रूप से अनाचारपूर्ण होते है। इन विवाहों को कानूनी रूप से ऐसा नहीं माना जाता, हालांकि निषिद्ध सम्बन्ध की डिग्री के भीतर या जो सपिण्ड हों उन्हें विवाह करने की अनुमति कानून भी नहीं देता। जैसे जाति जीवन पर्यन्त नहीं बदली जा सकती, उसी प्रकार गोत्र भी नहीं बदला जा सकता। सभ्यता के ऊषाकाल से चले आ रहे गोत्र आज तक अपनी अविच्छिन्न धारा के रूप में जाटों में चले आ रहे हैं। भाषान्तर या कालान्तर से रूप–भेद अवश्य होता रहा है और कभी–कभी नये विश्लेषण को भी गोत्र के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। यद्यपि जाट समुदाय में वर्ण–व्यवस्था, जातिवाद और ऊंच–नीच का अभाव और आडम्बर हीनता रही है परन्तु उनमें भारी संख्या में गोत्र मौजूद हैं, परन्तु वे ब्राह्मण–शास्त्रों में वर्णित गोत्रों से भिन्न रूप लिए हुए हैं, जिनमें इस प्रकार की गणना सातवीं पीढ़ी तक की जाती है। इसी रूढ परिभाषा और परम्परा से हटकर जाट 'गोत' शब्द का प्रयोग करते है, 'गोत्र' शब्द का नहीं। जाटों में गोत मोटे तौर पर उन लोगों को संदर्भित करता है जिनका वंश एक मूल पुरुष–पूर्वज के अटूट क्रम में जुड़ा है। उन्होंने सदैव स्वयं को रक्त सम्बन्ध और पैतृक गोत में संगठित किया है चाहे उसके बाद कितनी भी पीढ़ियाँ हो चुकी हों और उनका निवास स्थान भी बदल चुका हो। इसलिए जाटों में कहावत है– गोती–गोती भाई, बाकी सब अस्नाई। अर्थात् एक गोत के व्यक्ति आपस में भाई–भाई होते हैं और बाकी अन्य सब सम्बन्धी होते हैं। प्राचीन गोत्र इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुछ जाट–समुदाय भारत के मूल निवासी है और कुछ बाहर से आये शकों तथा अन्यों की संतानें हैं।

जाटों में भी गोत्र का मुख्य महत्व विवाह के सम्बन्ध में हैं जो एक सामान्य गोत्र में करना वर्जित हैं, क्योंकि जैसा पहले कहा जा चुका है। एक गोत्र के सदस्य परस्पर भाई बहन माने जाते हैं, और जाट इसके अभी तक पूरी तरह मानते आये हैं। जाटों में समान गोत्र के साथ–साथ, मात्ता (मामा) के गोत्र में भी विवाह नहीं किया जा सकता था, जो कुछ इलाकों में अभी भी प्रवचन में है। खाप पंचायतें इस पर काफी सख्ती बरतती आई है। खाप पंचायतें गोत्र के भीतर विवाह को कानूनी रूप से प्रतिबंधित करने के लिए अभियान चलाती रहती हैं। कादियान खाप के एक संयोजक श्री नरेश कादियान ने ऐसे विवाहों को कानूनी रूप से प्रतिबंधित करने के लिए हिन्दू विवाह अधिनियम में संशोधन की मांग करते हुए 2010 में दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी, जिसे खारिज कर दिया गया। (एचसी थ्रोज आउट ए प्ली टु फोरबिड सेम गोत्र मैरिजेज, "द इंडियन एक्सप्रेस" 19 जून, 2010)। विदेशी लेखकों द्वारा गोत्र और कुल को एक–साथ संदर्भित किया जाता है, लेकिन गोत्र कुल से अलग होता है। कुल एक विशेष परिवार की परम्परा होती है, जबकि गोत्र अनेक कुलों के बराबर होता हैं।

डॉ0 राजवीर दहिया विश्वविख्यात मैडीकल वैज्ञानिक

– सूरजभान दहिया, (मो० 9818120950)

हरियाणा की कर्म भूमिको **"जय जवान जय किसान"** की ख्याति चिरकाल से प्राप्त है। परन्तु इस प्रान्त की प्रतिभा की सीमाएँ असीम हैं। यहा के लोगो ने जिस क्षेत्र में अपना पैर बढाया और पसीना बहाया, वही पर अपनी पहचान बनाई। **"जय जवान, जय किसान"** के साथ **"जय पहलवान"** भी कुछ दशकों से जुड़ चुका है और इस सदी में हमारी वीर बसुन्धरा को **"जय विज्ञान"** की शोहरत भी प्राप्त होने वाली है।

हरियाणा में विज्ञान प्रतिमा का अंकुर 1930 के दशक में फूटा जब डा. रामध्वनसिह ने कृषिविज्ञान में क्रांति हेतु अपनी पहचान बनानी आरम्भ की। डॉ० रामधन सिह को अब हरियाणा विज्ञान के पितामह का सम्मान प्राप्त है। उनका जन्म 1 मई 1891 को किलाई गाँव (रोहतक) में हुआ था। मई के महीने में ही एक अन्य वैज्ञानिक डॉ० जगजीत सिंह राठी 20 मई 1926 को झज्जर जिले के भापडौदा में जन्मे थे तथा उन्हें स्पेशरिसर्च में अद्वितीय उपलब्धी प्राप्त करके अमेरीका के प्रख्यात शोध केन्द्र नासा से जुडकर हरियाणा का नाम रोशन किया।

इसी मास के महीने में यानी 30 मई, 1956 को सोनीपत जिले के बिघलान गांव में डा राजवीर दहिया का जन्म हुआ। जिन्होने मैडीकल के फील्ड में अद्वितीय शोध करके विश्वविख्यात मैडीकल वैज्ञानिक के रूप मे अपनी पहचान बनाई है। किसान परिवार से जुडे ये तीनो वैज्ञानिक ग्रामीण प्रतिभा के परिचायक बनकर हमारे प्रेरणा स्रोत बने हुये हैं– धन्य है किलाई की माटी, भापडौदे को माटी और बिघलान की माटी जहाँ से वैज्ञानिक पौध उपजी और विश्व को वैज्ञानिक शोध द्वारा मानव सेवा करके इन्होने ख्याति अर्जित की।

7 जुलाई 1963 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पी०जी०आई० चन्डीगढ का उद्घाटन किया था और 7 जुलाई 2025 को इस संस्था ने अपने 62 साल

का गौरवपूर्ण सफर पूरा किया, इस दिन मुझे इस संस्था में उपस्थित होने का गौरव प्राप्त हुआ। इस संस्था में PGI Alumni Relations cell है। डा० राजवीर दहिया PGI Chandigarh के Alumnus है। उन्होंने यहां से 1983 में Medical Science में पी०एच०डी० पाई थी तथा इसके पश्चात् उन्होने अपनी प्रतिभा को और निखारने हेतु अमेरीका में शिकांगो विश्वविद्यालय मे प्रवेश किया। इस युनिवर्सिटी के Pritzker School of Medicine से इन्होने मैडीकल बायोलोजी में पोस्ट डाक्टोरल फैलोशीप पाई। तत्पश्चात् 1987 में इन्होंने University of California, San Francisco के School of Medicine को Join कर लिया। डा० दहिया ने Kagoshima University की Faculty of Medicine, Japan से M.D. प्राप्त की तथा Osaka Universty Graduate School of Medicine Osaka Japan से DSC की डिग्री प्राप्त की। 1991 में फिर इन्होंने University of California, San Francisco Oncology Urology, Oncology Rese Centre में Director के पद ग्रहण किया और इस पद पर वे 34 वर्ष तक सुशोभित रहे।

डॉ० राजवीर दहिया– M.S. Phd, DSC Professor Emeritus तथा Director Urology Research Centre रहते हुये उन्होंने विस्तृत शोध की है जिसके कारण उन्होंने World Renowned Medical Scientist की ख्याति प्राप्त है।

डॉ० राजवीर दहिया का शोध क्षेत्र बहुत व्यापक है। उन्होंने 550 से अधिक original research manuscripts प्रकाशित किये हैं तथा उनकी विश्व में Medicine में Ranking 4759 में उनकी Ranking 2644 है तथा उनके नाम पर 35,500 Research Citations है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी है व काफी Patents file भी उन्होंने करवाये हैं।

डा० राजबीर दहिया 2002–2007 तक Dr. A.P.J. Abul Kalam भारत के राष्ट्रपति के Scientific Adviser रहे हैं। अब वे 'Society of American Asian Scientists के President है। जिसमें 5000 से अधिक Cancer Scientists जुडे हुये हैं। उन्होंने अभी अभी USA से Medical technologies भारत मे स्थानान्तरण करने हेतु भारत सरकार से अनुबन्ध किया है।

डा० राजवीर दहिया ने 2021 मे एक अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्था USA के कैलीफोर्निया राज्य के पंजीकृत की थी जो Oncology के क्षेत्र मे शोध कार्य एवं विकास के लिए कार्यरत है। उनका सघन शोध क्षेत्र एक आशा की किरण के साथ अग्रसर है तथा उनका दृढ़ संकल्प है कि वे दो–तीन साल में अन्दर घातक बिमारी को पराजित करने में सफल हो जायेंगे।

मैं अभी–अभी USA से लौटा है तथा मेरा सौभाग्य है कि मेरी इस Visit में उनसे मुलाकात हुई। एक समर्पित वैज्ञानिक के पास समय नहीं होता क्योकि वे शोध में इतने व्यस्त होते हैं कि अन्य कहीं टाईम देने में वे असमर्थ हो जाते हैं। फिर भी उन्होंने मेरे लिये टाईम निकाला तथा काफी समय मेरा साथ में व्यतीत किया।

डॉ० राजबीर दहिया विश्वविख्यात वैज्ञानिक होते हुये भी वे हरियाणा की वसुन्धरा से समर्पित भावना से जुडे हुये हैं। उनकी जुबान में हरियाणवी है उनकी आस्था हरियाणा में है, वे विशुद्ध ग्रामीण हरियाणवी है। रहन–सहन, बोलचाल, संस्कार तथा खान–पान सभी में लोकल हरियाणवी हैं। मैने उनमें अद्भुत, अद्वितीय व अगाढ अपनापन पाया। अपने माता–पिता के प्रति समर्पित, अपने गाव बिधुलान के प्रति समर्पित तथा अपने प्रान्त व देश के प्रति समर्पित–यह विश्वविख्यात वैज्ञानिक विभूति दो उद्देश्यों को पूर्ति अपने जीवन को संघर्षशील बनाये हुये है। उनके दो उद्देश्य हैं– ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की कान्ति एवं कैंसर को पराजय करना। He is not a Medical but he is also, Social Scientist Asta Medical Scientist.

जब मैंने उनके इन दोंनो मिशनो के बारे में विस्तृत चर्चा की तो मैंने पाया कि उनका दृढ़ संकल्प है कि कुछ भी नहीं मुश्किल, अगर ठाण लीजिये। यदि ग्रामीण शिक्षा क्रान्ति की बात करें तो उन्होंने अपने गावे बिघलान में शिक्षा उत्थान हेतु अद्वितीय पहल की है। इस प्रयोजन हेतु उन्होंने अपने गांव में शिक्षा प्रसारण हेतु खुलकर डॉलरो की वर्षा कर रखी है और आगे इसका क्षेत्र व्यापक करने हेतु वे कृत –संकल्पित हैं। जहां तक Cancer को मात देने का प्रश्न हैं उनकी Research Team इस क्षेत्र में बहुत करीब पहुंच गई है– Any time it may give the world a wonder and the team may be the claimant of Nobel Prize, फिर भी बस बिघलान में यहीं आवाज उठेगी – "कटारे के छौरे ने चाल्या पाड़ दिया" We all wait for The D-Day - All the best Dr. Rajbir

Catastrophic Floods in Panjab

- R.N.Malik, (Mob. 9911078502)

Panjab state again faced the catastrophic floods after a gap of 36 yrs.. Floods this year have different reasons for their occurrence than in 1988. In 1988, heavy rains were limited to catchment areas of Satluj and Beas rivers. There was 640 mm of rainfall within four days. Ranjeet Sagar Dam across river Ravi had not been constructed by then. Accordingly, heavy inflow of water in the Bhakra and Pong dam reservoirs could not be accomodated and there was no other alternative with B.B.M.B but to open the floodgates of the two reservoirs.

Consequently, a discharge of 4 lac cussecs from Bhakra and 3 lac cusecs from Pong (Talwara) dam.was released. This sudden heavy discharge in the two rivers caused the floods. In the present case, as reported in the Tribune on 5th September, there was a flow of 4.5 lac cusecs in Ravi and 3.2 lac cusecs in Satluj. Till then. B.B.M.B was releasing only a limited flow to the extent of generation of power at the rated capacity from the power houses. Such details were not available from the Ranjeet Sagar Dam managed by the Hydel branch of Panjab Irrigation department. But even there, the engineers working at the Dam must have exercised full restraint to ensure the release of optimum flow only. Therefore, the excessive flow in Ravi, Beas and Satluj prior to 8th September was due to the run-off from the sub-hilly or Kandi area falling downstream of the three dams. There are large number of small rivers or Nallahs that join Satluj river between Nangal dam and Ropar. Same is the case in respect of two other rivers.

There are three rivers that flow through the territory of Panjab state namely Satluj, Beas and Ravi. Ghaggar river more or less forms the boundary between Panjab and Haryana states. Beas joins Sstluj river at the confluence at Harike Patan. Ravi, more or less, forms the boundary between Panjab (India) and Pakistan. Multi-purpose storage dams have been constructed across all the three dams. The storage of Bhakra or Gobindsagar reservoir is 7.30 bcm (billion cubic metre), that of Pong dam reservoir is 8.6 bcm and that of Ranjeetsagar dam across Ravi is 3.3 bcm. This shows that storage capacity of Ranjeetsagar is not even half of the storage capacity of the other two reservoirs. So flood routing or control through Ranjeetsagar dam is not as effective as in case of Bhakra and Pong dam reservoirs. This is another reason for more menacing floods in Ravi river than in the two other rivers.

B.B.M.B. has been daily supplying figures of inflow and outflow in the two reservoirs but Panjab engineers did not release such vital information to the media regarding Ranjeetsagar. Problem is caused at Harike Patan wetland where river Beas joins the Satluj. The flow in Rajasthan canal is released from Harike Barrage while surplus water of Satluj is passed on to Pakistan through the Hussaniwallah barrage at Indo-Pak border. The distance e between two barrages is 30kms.. Sudden inflow of 3.5 lacs also created problems at the rims of the wetland and the 30 kms river reach in Fazilka district.

B.B.M.B did not release extra flow in Satluj and Beas till 7th of September. But when the reservoir levels touched the red line, a flow of about one lac cusecs had to be released at Pong dam and Bhakra reservoirs. Similar flow must have been released from the Ranjeetsagar reservoir too. This extra release further compounded the flood situation in Panjab. However, after two days, the inflow into the two reservoirs reduced by 70% and came down to 30000 cusecs. But outflow was not reduced in the same ratio because BBMB wanted to further bring down the reservoir levels by few meteres more to take care of any eventuality of larger inflow later.

Another potential reason for floods in Panjab was that people, Irrigation department and Panjab government developed a false sense of security that after the construction of big dams, the three rivers would never be in spate. Therefore farmers and miniing mafia breached the embankments of the three rivers to pass there machinery and vehicles. Both Irrigation department and the Panjab government just did not look at these breaches. Consequently, flood waters from the rivers gushed towards the fields through these man-made wide breaches and flood water started spreading towards the fields and villages as much as it could do.Ghaggar river, also in spate, caused serious damage to both Haryana and Panjab states in the similar pattern as neither Ghaggar nor its tributory Markanda have been tamed by constructing dams in the upper reaches.

Now rains have stopped in Panjab and Himachal and flood levels in rivers has started receding. Panjab government has assessed that 1.74 lac hectares of agricjltural land had been submerged with total destruction of paddy and sugarcane crops. Total financial loss has been assessed to the tune of Rs.14000 crore. Government of India doled out a financial assistance of Rs.2600 crore- a pittance in comparison to the actual damage or loss in the land.

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 11.08.99)26/5'7" B.Com. (Hons.) Christ University Banglore. Employed in BAIN & Company Gurugram. Salary 27 lakh per annum. Father Senior Manager in MNC at Banglore. Mother Teacher (HOD-Hindi) at Banglore. Brother B. Tech, Developer in MNC at Banglore. Preference: IIT/NIT/Engineering Graduate/MBA/CA/Job in MNC. Avoid Gotras: Goyat, Saharan, Grewal. Cont.: 8168294936*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07.07.93) 32/ 5'6" B. Com from Punjab University. MBA in Finance & IT from P.T.U. Father retired from Air Force, now serving in Haryana Agriculture Department Panchkula. Mother housewife. Family living in Zirakpur. Preferred match in Govt./Pvt. (MNC) job, or working in Foreign on PR/citizenship & settled educated family living in Chandigarh, Panchkula, Kurukshetra, Mohali area, height minimum 5 feet 9 inches or above. Avoid Gotras: Ranwa, Dhaka, Bilewal. Cont.: 7896552697*
- *SM4 Jat Girl (DOB 06.02.92) 33/5'3" M.A. from Punjab University. B.Ed. Working as Teacher in a private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258*
- *SM4 Jat Girl (DOB 23.06.2000) 25/5'1" B. Com. from Delhi University.*

B.Ed. from Ch. Charan Singh University Meerut. Father occupation Business. Avoid Gotras: Lakra, Malik. Cont.: 9216000072

- *SM4 Jat Girl (DOB 1990) 35/5'8" Convent educated. Post Graduate from Punjab University Chandigarh. Employed in International School at Chandigarh. Well educated in urban petting. Avoid Gotras: Malik, Sura. Cont.: 9465448508*
- *SM4 Jat Girl (DOB 22.06.97) 28/5'3" B.Sc. Nursing. Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh. Father Chemist shop at Panchkula. Mother housewife. Brother Sub Inspector in Punjab Police. Family settled at Dhakoli, Zirakpur. Plot in Chandigarh. Seven acre agriculture land in village. Avoid Gotras: Bhanwala, Mor, Khatkar. Cont.: 9417579207*
- *SM4 Jat divorced girl 34/5'4" PhD. Working as Assistant Professor in a reputed private University. Seeking match professional qualified well settled with good family values. Avoid Gotras: Malik, Sheoran, Dhull. Cont.: 9872415151*
- *SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 27/5'6" B.Sc. Nursing. Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh. Father retired Inspector from Haryana Police. Mother housewife. Preferred serviceman, businessman from family settled in Chandigarh, Panchkula, Tricity. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Cont.: 9468407521*
- *SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 30/5'7" B.Sc. from P. U. Chandigarh. Working as Cabin Crew in (Air India) Airlines. Family settled in Chandigarh. Father's own business (Book shop) in Chandigarh. Own shop and house in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607*
- *SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, Diploma in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Hry. govt. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Cont.: 9417333298*
- *SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950*
- *SM4 Jat Boy (DOB 24.08.98) 27/5'11" B. Tech. Civil Engineering from PEC Chandigarh. M. Tech. Structure Engineering from IIT Roorkee. Employed as Scientific Officer Nuclear Power Corporation, Mumbai, Department of Atomic Energy. Father Deputy General Manager in HMT Pinjore (Haryana). Mother PGT in Hry. Govt. Elder sister PhD. from IITD, working as Assistant Professor in IIT & married. Preferred well educated family with moral values, non alcoholic, non-smoker and vegetarian. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sandhu. Cont.: 8295227699*
- *SM4 Divorced Jat Boy (DOB 06.08.93) 32/ 6feet. B.A. Employed as Store Keeper in Tata Motors. Three ace agriculture land. Avoid Gotras: Aujla, Lalar, Baisaiti. Cont.: 9416460301, 9468233366.*
- *SM4 Jat Boy (DOB 02.06.99) 26/ 6feet. 12th passed. Employed as Senior T.T. in Indian Railway at Ratlam (M.P.) National Gold Medalist in Wrestling. Two ace agriculture land. Avoid Gotras: Dalal, Jakhar, Phaugat. Cont.: 9050258654 .*
- *SM4 Jat Boy (DOB 24.09.95) 30/ 6'1" B. Tech in E.C.E. MBA in Creative Business Management from U. K. (London). Presently working in private sector at Zirakpur, (Mohali. Punjab). Father retired from Air Force, now serving in Haryana Agriculture Department Panchkula. Mother housewife. Family living in Zirakpur. Preferred well educated, working in Govt./Pvt (MNC) Sector of well settled family. Height above 5,5". Avoid Gotras: Ranwa, Dhaka, Bilewal. Cont.: 7896552697, 7888830647*
- *SM4 Jat Boy (DOB September 94) 31/ 5'9" Government job in Post office Panchkula. Avoid Gotras: Dhayal, Poonia, Phogat. Cont.: 9996611722*
- *SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 26/5'9" B.Com. Diploma in Computer Horton. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Cont.: 8146229865, 9877552019*
- *SM4 Jat Boy (DOB 21.11.97) 27/ 6feet. B. Tech CSE. Employed as Senior Software Engineer in a reputed MNC at Banglore with salary package of Rs. 60 LAP. Parents retired Class-I officers from Haryana Government and settled at Panchkula. Avoid Gotras: Khokhar, Gurawalia, Mor. Cont.: 9878768027*
- *SM4 Jat Boy (DOB 11.03.94) 31/5'8" Architect by profession. Well educated urban family. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.: 9888626559*
- *SM4 Jat Boy (DOB 14.06.95) 30/6'2". MBA (Fore School of Management Delhi). B. Tech. Mechanical (VIT Vellore). Employed in MNC with package Rs. 15 lac per annum. Father's banking profession. Mother housewife. Avoid Gotras: Mor, Sheoran. Cont.: 8575000593*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.09.95) 29/5'9". MBBS & PG Pediatrics. Service as HCMS MO. Salary Rs. 12-15 LPA. Father Sub-Inspector in Haryana Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Phaugat, Gill, Dahiya. Cont.: 9812011590*
- *SM4 Jat Boy (DOB 22.11.98) 27/5'10 B.Sc., M.A., Employed as Sub Inspector in Punjab Police. Father Chemist shop at Panchkula. Mother housewife. Elder sister Nursing Officer in PGI Chandigarh. Family settled at Dhakoli, Zirakpur. Plot in Chandigarh. Seven acre agriculture land in village. Avoid Gotras: Bhanwala, Mor, Khatkar. Cont.: 9417579207*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.01.95) 30/6'4". B. Tech. Mechanical Engineering from DTU. MBA (XLRI) Gold Medalist. Working in Amazon at Banglore. 60 lac CTC. Father retired Chief General Manager from Indian Oil Corporation Ltd. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Nara, Kadyan. Cont.: 8657735116*
- *SM4 Jat Boy (DOB 27.10.93) 31/5'9". B. Tech. Mechanical Engineering. MBA from Punjab University. Worked in HDFC and ICICI Banks. Employed as Sub Inspector in Punjab Police (District Police) at Mohali. Father Assistant Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Barak, Lathar, Narwal. Cont.: 9779666000, 8054575757*
- *SM4 Jat Boy (DOB 15.11.96) 28/6feet. B.Tech. CSC. Working in Infosis Ltd. Chandigarh. Income Rs. 16 LPA. Father Ex-Air force personnel. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Lakra, Malik, Mann. Cont.: 7989389447, 9463954830*
- *SM4 Jat Boy (DOB May 1999) 26/5'7" B. Tech from PEC Chandigarh. Employed as Software Engineer in reputed company at Banglore with package of Rs. 60 lakh per year. Father in Government job at Chandigarh. Mother housewife. Younger brother pursuing B. Tech. Avoid Gotras: Seniwal, Budania, Jhajhra. Cont.: 9417317416*
- *SM4 Jat Boy (DOB 07.06.91) 33/5'6" B. Tech (IT). M. Tech, Cyber Security Macquarie University Sydney, Australia. Working as Network Engineer at HSC Gurugram (work from home). Has Canada Ontario PR-willing to move to Canada. Income 60000- PM. Family income Rs. 30-35 LPA. Father Advocate & notary. Mother PGT, Haryana Government school. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Pannu, Phor, Malik. Cont.: 9888727222*
- *SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 32/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Haryana government. Mother in private job. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747*
- *SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 27/ 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 22.5 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881*
- *SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853*
- *SM4 Jat Boy 26è6'1" preferable in teaching profession at ChdèPkl, M.A., B.P.Ed employed as Sub Inspector in Punjab Police, Mohali. Parents Haryana Govt. employees and settled in Rohtak. Avoid Gotra: Dahiya, Dangi, Bhanwala & Sangwan. Cont.: 9466702703, 8826196133*

यदि आप सूरज की तरह चमकना चाहते हैं तो पहले सूरज की तरह जलना होगा।

दिनांक 02 अक्तूबर 2025 को सुबह 10 बजे से सांय 03 बजे तक भगत फूल सिंह प्रथम जाट परिवार परिचय सम्मेलन का जाट भवन, सैक्टर 6, पंचकूला में आयोजन।

आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं स्व चौ0 छोटूराम सेवा सदन, कटरा, द्वारा 02 अक्तूबर 2025 को जाट भवन सैक्टर 6, पंचकुला में भगत फूल सिंह जाट परिवार परिचय सम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। सुबह 9 से 10 बजे तक हवन यज्ञ सम्मपन किया जायेगा। 10 से 12 बजे तक महान समाज सुधारक स्व. भगत फूल सिंह के सम्मान में विचार गोष्टी समारोह का आयोजन किया जायेगा जिसमें श्रीमति कृष्णा मलिक, पूर्व चेयरपर्सन, कन्या गुरूकुल महासभा खानपुर कलां एवं भैंसवाल कलां, मुख्य अतिथि होगी। चौ0 जयसिंह ठेकेदार, पूर्व महासचिव, कन्या गुरूकुल महासभा खानपुर कलां एवं भैंसवाल कलां इस समारोह की अध्यक्षता करेंगे। इसके अलावा विभिन्न समाज सुधारको, बुद्धीजीवियों व मुख्य आर्य समाजीयो द्वारा भगत फूल सिंह द्वारा स्त्री शिक्षा के विकास व समाज हित में किये गयें प्रयासो का वर्णन किया जायेगा। 12 बजे दोपहर से भोजन के साथ ही जाट परिवार परिचय सम्मेलन का कार्यक्रम शुरू हो जायेगा जिसमें समाज के विवाह योग्य युवक–युवक्तियो के विस्तृत वैवाहिक बॉयोडाटा प्रस्तुत किये जायेगे। सम्मेलन के दौरान जलपान व भोजन की विशेष तौर से व्यवस्था की गई है।

अतः आप सभी से निवेदन है कि दिनांक 02 अक्तूबर 2025 को अपने अन्य मित्रों व परिजनो सहित उक्त सम्मेलन समारोह में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाये। इसके साथ ही विवाह योग्य युवक – युवक्तियां अपना बायोडाटा जाट भवन, सैक्टर 6, पंचकुला के कार्यालय में अथवा आन लाईन भेजने की कृपा करे।

राकेश गिल, सह सयोजंक 9466205869,
प्रेम सिंह, जाट भवन चण्डीगढ़ 9056787532,
जयमल मलिक, जाट सभा पंचकूला 9467763337,
जाट सभा पंचकुला 0172–2590870
ईमेलः jat_sabha@yahoo.com, jatbhawan6pkl@gmail.com

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चण्डीगढ, पंचकुला एवं चौ. छोटू राम सेवा सदन कटरा

हमें जिन पर गर्व है

वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2025

नायब सूबेदार जैस्मिन लंबोरिया
भिवानी – गोल्ड – 57 KG

मीनाक्षी हुड्डा – रोहतक
गोल्ड – 48 KG

नूपुर श्योराण
भिवानी – सिल्वर – 80 KG

पूजा बोहरा
भिवानी – ब्रॉन्ज – 80 KG

उपरोक्त सभी खिलाड़ियों की शानदार उपलब्धि पर जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ0 छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और इनके व समस्त परिवारों के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870, M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।